Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا
إِنَّكَ لَن تَخْرِقَ الْأَرْضَ
وَلَن تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا

(बनी इसराईल : 30)

अनुवाद : और ज़मीन में हठपूर्वक न चलो। आप निश्चित रूप से न तो धरती को चीर सकते हैं और न ही कद में पहाड़ों की ऊंचाइयों तक पहुंच सकते हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 8
अंक-27

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

17 ज़ुल्- हज्जा 1444 हिज्री कमरी, 06 वफ़ा 1402 हिज्री शम्सी, 06 जुलाई 2023 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

अमन उस वक़्त तक क़ायम हो ही नहीं सकता जब तक लोगों के अंदर हक़ीक़ी भाईचारा पैदा न हो और हक़ीक़ी भाईचारा एक ख़ुदा को माने बग़ैर पैदा नहीं हो सकता

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल होने वाली कामिल शरीयत में वर्णन फ़र्मूदा तालीमात की रोशनी में हक़ीक़ी और स्थाई अमन-ए-आलम के क़ियाम के विषय में वर्णन

जमाअत के लोगों को अपना किरदार इस्लामी तालीमात के अनुसार करते हुए दुनिया के लिए अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करने का उपदेश

सय्यदना अमीरुल-मोमनीन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की अनुमति से जलसा सालाना जमाअत अहमदिया जर्मनी का अंतिम भाषण 21 अगस्त 2022 ई. प्रश्न उत्तर के रूप मे

प्रश्न : हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने ख़िताब के शुरू में covid महामारी के बाद की किस परेशानी का वर्णन फ़रमाया जिसने दुनिया को ख़तरनाक मोड़ पर खड़ा कर दिया है?

उत्तर : हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : पहले covid की महामारी ने दुनिया को परेशान किया और अभी वह महामारी की परेशानी ख़त्म नहीं हुई तो अब दुनिया में जंगों की सूरत-ए-हाल ने दुनिया को एक इंतेहाई ख़तरनाक मोड़ पर ला कर खड़ा कर दिया है। दुनिया का कोई क्षेत्र भी इस आने वाली तबाही से सुरक्षति नज़र नहीं आता।

प्रश्न : हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यूरोप और एशिया की सरज़मीन के बारे में क्या भविष्यवाणी फ़रमाई?

उत्तर : हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यूरोप और एशिया के मुताल्लिक़ भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि हे यूरोप तू भी अमन में नहीं और हे एशिया तू भी महफ़ूज़ नहीं और हे जज़ायर के रहने वालो कोई बनावटी ख़ुदा तुम्हारी सहायता नहीं करेगा। मैं शहरों को गिरते देखता हूँ और आबादियों को वीरान पाता हूँ।

प्रश्न : हक़ीक़ी अमन कब क़ायम हो सकता है?

उत्तर : हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हक़ीक़ी अमन उस वक़्त तक क़ायम नहीं हो सकता जब तक एक बाला हस्ती को स्वीकार न कर लिया जाए । तथा फ़रमाया अमन उस वक़्त तक क़ायम हो ही नहीं सकता जब तक लोगों के अंदर हक़ीक़ी भाईचारा पैदा न हो और हक़ीक़ी भाईचारा एक ख़ुदा को माने बग़ैर पैदा नहीं हो सकती।

प्रश्न : हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हक़ीक़ी अमन क़ायम करने की ख़ातिर क्या फ़रमाया?

उत्तर : हज़ूर अनवर ने फ़रमाया : हक़ीक़ी अमन तभी होगा जो ज़ाती, ख़ानदानी, नसली, क़ौमी, मुल्की तर्जीहात से परे हो कर शांति क़ायम करने का प्रयास किया जाए और यह उसी सूरत में हो सकता है जब इन्सान इस बात को समझ ले कि मेरे ऊपर एक बाला हस्ती है जो मेरे लिए ही अमन नहीं चाहती बल्कि समस्त दुनिया के लिए अमन चाहती है।

प्रश्न : अल्लाह तआला ही अमन देने वाला है यह अक़ीदा कौन पेश करता है?

उत्तर : हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यह अक़ीदा कि अल्लाह तआला अमन देने वाला है सिर्फ इस्लाम ने ही आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम के द्वारा पेश किया है।

प्रश्न : कब हम बदक़िस्मत लोग कहलाएँगे?

उत्तर : हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और क़ुरआन-ए-करीम को भेज कर इन्सानियत पर बहुत बड़ा एहसान किया है अगर इन्सान इस से फ़ायदा न उठाए और अपने तबाह करने वाले ख़ुद गरज़ाना मुफ़ादात का ही असीर रहे तो इस से बड़ी बदक़िस्मती और क्या हो सकती है।

प्रश्न : आज कल के जो दुनिया के हालात हैं उनसे कैसे बचा जा सकता है?

उत्तर : हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया ऐसे में अगर कोई उम्मीद की किरण है, अमन की ज़मानत है तो एक ही वजूद है जिसको अल्लाह तआला ने अमन-ओ-सलामती की तालीम के साथ दुनिया में भेजा था, जो शहनशाह-ए-अमन है, जो अल्लाह तआला को सब इन्सानों से ज़्यादा प्यारा है, जिस पर अल्लाह तआला की आख़िरी कामिल और मुकम्मल शरीयत उतरी, जिसकी तालीम प्यार और मुहब्बत की तालीम है, जिसने अपने ख़ुदा तआला के ताल्लुक़ की वजह से और अपने ऊपर उतरी हुई तालीम को दुनिया में फैलाने और दुनिया को तबाही से बचाने की फ़िक्र और इसके लिए शदीद दर्द महसूस करने की वजह से अपनी ज़िंदगी हलकान कर ली थी। इस हद तक अपनी हालत कर ली थी और करब से तड़प कर और रो-रो कर अल्लाह तआला से दुआएं कीं कि अल्लाह तआला आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को फ़रमाया कि لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ (अल् शोरा : 4) क्या तू अपनी जान को इसलिए हलाक कर देगा कि वह मोमिन नहीं होते।

प्रश्न : जनगों की सूरत में किस तरह की तबाही होनी है?

उत्तर : हज़ूर अनवर ने फ़रमाया कुछ जगह तजज़िया निगार ये भी कह रहे हैं कि जंगों की सूरत में जो तबाही होनी है वह ऐसी ख़ौफ़नाक होगी कि एक अंदाज़े के मुताबिक़ दौरान-ए-जंग और इस के बाद के दो सालों में ऐटमी हथियारों के प्रयोग

शेष पृष्ठ 11 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

ख़ुत्बः जुमअः

"...हमारे विरोधी दिन रात प्रयास कर रहे हैं और अत्यंत कष्ट और परिश्रम से तरह तरह के योजनाएं सोच रहे हैं
और सिलसिला को बंद करने के लिए पूरा ज़ोर लगा रहे हैं परंतु ख़ुदा हमारी जमाअत को बढ़ाता जाता है।"
(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"अल्लाह जल्ला शानहू जिसको अवतरित करता है और जो वाक़ई तौर पर ख़ुदा की तरफ़ से होता है, वह प्रतिदिन तरक़्क़ी करता और बढ़ता है
और उसका सिलसिला दिन-ब-दिन रौनक पकड़ता जाता है।
और उसके रोकने वाला दिन-ब-दिन तबाह और ज़लील होता जाता है और उसके विरोधी और मुकज़्ज़िब आख़िर कार बड़ी हसरत से मरते हैं"
(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

तथाकथित उल्मा और विरोध करने वाले समझते हैं कि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत को अपनी फूँकों से ख़त्म कर देंगे लेकिन नहीं जानते कि वो अल्लाह तआला से मुक़ाबला कर रहे हैं और अल्लाह तआला के मुक़ाबिल पर जब खड़े हों तो अपनी ही तबाही होती है

पाकिस्तान में भी एक तरफ़ तो हमारे मिनारे गिराए जा रहे हैं,मस्जिदों की मेहराबें गिराई जा रही हैं
दूसरी तरफ़ अल्लाह तआला ख़ूबसूरत मस्जिदें हमें दूसरी जगह अता फ़र्मा रहा है और कसरत से अता फ़र्मा रहा है

हज़रत-ए-अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई और जमाअती विश्वव्यापी प्रगति का चित्रांकन करने वाले कुछ ईमान बढ़ाने वाली घटनाओं का वर्णन

प्रवीण अख़्तर साहिबा पत्नी ग़ुलाम क़ादिर साहिब आफ़ स्यालकोट, मुमताज़ वसीम साहिबा पत्नी चौधरी वसीम अहमद नासिर साहिब आफ़ घटयालियाँ, ब्रिगेडियर मुन्नवर अहमद राना साहिब आफ़ रावलपिंडी और अब्दुल शकूर मलिक साहिब साबिक़ नायब अमीर जमाअत अहमदिया रावलपिंडी की वफ़ात पर उनका वर्णन और नमाज़े जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 19 मई 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ
وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ
-أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ
-بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ○ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ
الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जमाअत पर अल्लाह तआला के फ़ज़्ल और उस के बढ़ते चले जाने का वर्णन फ़रमाते हुए एक जगह फ़रमाते हैं कि "यह भी अल्लाह जल्ला शानहू का बड़ा चमत्कार है कि बावजूद इस क़दर तक़्ज़ीब और तकफ़ीर के और हमारे मुख़ालिफ़ों की दिन रात की सिर तोड़ कोशिशों के यह जमाअत बढ़ती जाती है।" फ़रमाया "..हमारे विरोधी दिन रात प्रयास कर रहे हैं और अत्यंत कष्ट और परिश्रम से तरह तरह के योजनाएं सोच रहे हैं और सिलसिला को बंद करने के लिए पूरा ज़ोर लगा रहे हैं परंतु ख़ुदा हमारी जमाअत को बढ़ाता जाता है।" फिर फ़रमाया "जानते हो कि इस में क्या हिक्मत है? हिक्मत इस में यह है कि अल्लाह जल्ला शानहू जिसको अवतरित करता है और जो वाक़ई तौर पर ख़ुदा की तरफ़ से होता है वह प्रतिदिन तरक़्क़ी करता और बढ़ता है और उसका सिलसिला दिन-ब--दिन रौनक पकड़ता जाता है और उसके रोकने वाला दिन-ब-दिन तबाह और ज़लील होता जाता है और उसके विरोधी और मुकज़्ज़िब आख़िर कार बड़ी हसरत से मरते हैं।" फ़रमाया "..ख़ुदा तआला के इरादा को जो दरहक़ीक़त उसकी तरफ़ से है कोई भी रोक नहीं सकता। और ख़ाह कोई कितनी ही कोशिशें करे और हज़ारों योजनाएं सोचे परंतु जिस सिलसिला को ख़ुदा शुरू करता है और जिसको वह बढ़ाना चाहता है इस को कोई नहीं रोक सकता क्योंकि अगर उनकी कोशिशों से वह सिलसिला रुक जाए तो मानना पड़ेगा कि रोकने वाला ख़ुदा पर ग़ालिब आगया। हालाँकि ख़ुदा पर कोई ग़ालिब नहीं आ सकता।"

(मल्-फ़ूज़ात, भाग10 पृष्ठ 24 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः आप इन बातों के पूरा होने के नज़्ज़ारे हम हर-रोज़ देखते हैं। दुश्मन ने इन्फ़िरादी तौर पर भी कोशिशें कीं और मुनज़्ज़म हो कर बज़ाहिर एक हो कर जमाअत के ख़िलाफ़ मंसूबा बंदी करने का भी प्रयास किया लेकिन अल्लाह तआला ने जो आप अलैहिस्सलाम से वादा किया था कि "मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुंचाऊंगा।"(तज़्करः पृष्ठ 260 ऐडीशन चहारुम) और फिर फ़रमाया कि "मैं तेरे ख़ालिस और दिल से प्रेम करने वालों का गिरोह बढ़ाऊँगा।"(आईना कमालात-ए-इस्लाम, रुहानी खजाएन भाग 5 पृष्ठ 648)इसके मुताबिक़ हम जमाअत को दुनिया में फैलता देख रहे हैं। ये तथाकथित उल्मा और विरोध करने वाले समझते हैं कि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत को अपनी फूँकों से ख़त्म कर देंगे लेकिन नहीं जानते कि वे अल्लाह तआला से मुक़ाबला कर रहे हैं और अल्लाह तआला के मुक़ाबिल पर जब खड़े हों तो अपनी ही तबाही होती है और अल्लाह तआला अपने बंदे की सहायता और ताईद और नुसरत फ़रमाता है।

अल्लाह तआला की ताईद और सहायता और नुसरत के नज़्ज़ारे हम दुनिया के दूर दूर के मुल्कों में भी देखते हैं। ऐसे इलाक़ों में जहां कई दफ़ा आम तौर पर इन्सान की पहुंच नहीं होती, बड़े मुश्किल रस्ते होते हैं लेकिन अल्लाह तआला वहां भी अपनी ताईद के नज़्ज़ारे दिखा रहा है। विरोध करने वाले अपनी भरपूर प्रयास करते हैं लेकिन नाकामी देखते हैं।

जानी और माली नुक़्सान पहुंचा कर कई जगह अफ़राद-ए-जमाअत को ख़ौफ़ज़दा करना चाहते हैं लेकिन ये बातें अफ़राद-ए-जमाअत के ईमान में इज़ाफ़ा करती हैं।

दुनिया में जो अल्लाह तआला की ताईद के घटनाएं होती हैं, जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से अल्लाह तआला के वादे हैं ये किस तरह पूरे होते हैं उनका अहाता करना तो संभव नहीं है लेकिन इस वक़्त मैं कुछ घटनाएं जमाअत की तरक़्क़ी की वर्णन करूँगा।किस तरह अल्लाह तआला लोगों के दिलों में डालता है कि वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आएं और मानें।

कुछ लोग मुख़ालेफ़त करते हैं लेकिन कम इलमी की वजह से यह मुख़ालेफ़त होती है। जब उन्हें हक़ीक़त का इलम हो तो न सिर्फ मुख़ालेफ़त तर्क कर देते हैं बल्कि क़बूल भी कर लेते हैं। इसलिए ऐसे ही एक वाक़िया का वर्णन करते हुए अमीर जमाअत कांगो किंशासा ने लिखा कि सूबा कांगो सेंट्रल के एक गांव के एक हिस्सा में हमारे मुअल्लिम हैं ईसा साहिब। वह जमाअत के दल के साथ तब्लीग़ के लिए गए। वहां के इमाम मस्जिद जिबराईल साहिब जमाअत की मुख़ालेफ़त के हवाले से बहुत मशहूर थे। उनके साथ वफ़ात-ए-मसीह और ज़हूर इमाम महदी के ऊपर गुफ़्तगु हुई। जब उन पर ये बात वाज़ेह हो गई कि हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम की हयात के अक़ीदे के नतीजा में नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपमान है तो ये बात वह समझ गए। ढिटाई नहीं थी उनमें पाकिस्तानी मौलवियों की तरह और ज़हूर-ए-इमाम महदी का अक़ीदा भी उनकी समझ में आगया। उन्होंने उसी वक़्त अपने ख़ानदान के छः लोगों और अपने इक्कीस मुक़तदियों के साथ बैअत कर ली। इस तरह यहां जमाअत भी क़ायम हो गई।

फिर कुछ जगह अल्लाह तआला ख़ुद क़बूलियत के लिए ज़मीन तैयार करता है इसलिए गिनी कनाकरी के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि वहां एक गांव कोटाया (Kotoya) है वहां तब्लीग़ के उद्देश्य से पहुंचे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पैग़ाम

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

"तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना ज़रूरी है"
और इसका आना तुम्हारे लिए बेहतर है क्योंकि वह दायमी है जिसका सिलसिला क़ियामत तक बंद नहीं होगा"
(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"मैं ख़ुदा की तरफ़ से एक क़ुदरत के रंग में ज़ाहिर हुआ
और मैं ख़ुदा की एक मुजस्सम क़ुदरत हूँ और मेरे बाद कुछ और वजूद होंगे जो दूसरी क़ुदरत का मज़हर होंगे"
(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

विरोधी भी यह कहने पर मजबूर हैं कि अल्लाह तआला की दिखाई देने वाली शहादत तुम्हारे साथ है

ख़िलाफ़त हक़्क़ा इस्लामिया की सहायता का चित्रांकन करने वाले कुछ ईमान बढ़ाने वाली घटनाओं का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 26 मई 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ
وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ
-أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ
-بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ○ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ
الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○

अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को जब यह ख़बर दी कि आपका इस दुनिया से रुख़स्त होने का वक़्त क़रीब है तो आप जमाअत को संबोधित करते हुए फ़रमाया : अल्लाह तआला "दो किस्म की क़ुदरत ज़ाहिर करता है। (1) अव्वल ख़ुद नबियों के हाथ से अपनी क़ुदरत का हाथ दिखाता है (2) दूसरे ऐसे वक़्त में जब नबी की वफ़ात के बाद मुश्किलात का सामना पैदा हो जाता है और दुश्मन ज़ोर में आ जाते हैं और ख़्याल करते हैं कि अब काम बिगड़ गया और यक़ीन कर लेते हैं कि अब यह जमाअत नाबूद हो जाएगी और ख़ुद जमाअत के लोग भी तरद्दुद में पड़ जाते हैं और उनकी कमरें टूट जाती हैं और कई बदक़िस्मत मुर्तद होने की राहें इख़्तेयार कर लेते हैं। तब ख़ुदा तआला दूसरी मर्तबा अपनी ज़बरदस्त क़ुदरत ज़ाहिर करता है और गिरती हुई जमाअत को सँभाल लेता है। अतः वह जो अख़ीर तक सब्र करता है ख़ुदा तआला के इस मोजिज़ा को देखता है जैसा कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो के वक़्त में हुआ जब कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मौत एक बेवक़्त मौत समझी गई और बहुत से बादिया नशीन नादान मुर्तद हो गए और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो भी मारे ग़म के दीवाना की तरह हो गए। तब ख़ुदा तआला ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो को खड़ा कर के दुबारा अपनी क़ुदरत का नमूना दिखाया और इस्लाम को नष्ट होते होते थाम लिया और इस वादा को पूरा किया जो फ़रमाया था وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا (नूर : 56) अर्थात ख़ौफ़ के बाद फिर हम उनके पैर जमा देंगे। ऐसा ही हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम के वक़्त में हुआ जब कि हज़रत मूसा मिस्र और कनआन की राह में पहले इस से जो बनीइसराईल को वादा के अनुसार मंज़िल-ए-मक़्सूद तक पहुंचा दें फ़ौत हो गए और बनीइसराईल में उनके मरने से एक बड़ा मातम बरपा हुआ जैसा कि तौरेत में लिखा है कि बनीइसराईल उस बेवक्त मौत के सदमा से और हज़रत मूसा की नागहानी जुदाई से चालीस दिन तक रोते रहे। "फ़रमाया "..अतः हे अज़ीज़ो जब कि क़दीम से अल्लाह की सुन्नत यही है कि ख़ुदा तआला दो क़ुदरतें दिखलाता हैता मुख़ालिफ़ों की दो झूठी ख़ुशियों को नष्ट कर के दिखला यह अतः अब संभव नहीं है कि ख़ुदा तआला अपनी क़दीम सुन्नत को तर्क कर देवे। इस लिए तुम मेरी इस बात से जो मैं ने तुम्हारे पास वर्णन की ग़मगीं मत हो और तुम्हारे दिल परेशान न हो जाएं क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना ज़रूरी है और उसका आना तुम्हारे लिए बेहतर है क्योंकि वह दाइमी है जिसका सिलसिला क़ियामत तक मुनक़ते नहीं होगा।

और वह दूसरी क़ुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊं लेकिन मैं जब जाऊँगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो हमेशा तुम्हारे साथ रहेगी जैसा कि ख़ुदा का बराहीन-ए-अहमदिया में वादा है और वह वादा मेरी ज़ात की निसबत नहीं है बल्कि तुम्हारी निसबत वादा है जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं इस जमाअत को जो तेरे पैरौ हैं क़ियामत तक दूसरों पर ग़लबा दूँगा। अतः ज़रूर है कि तुम पर मेरी जुदाई का दिन आवे ता बाद उसके वह दिन आवे जो दाइमी वादा का दिन है वह हमारा ख़ुदा वादों का सच्चा और वफ़ादार और सादिक़ ख़ुदा है वह सब कुछ तुम्हें दिखाएगा जिसका उसने वादा फ़रमाया जबकि ये दिन दुनिया के आख़िरी दिन हैं और बहुत बलाऐं हैं जिनके नुज़ूल का वक़्त है पर ज़रूर है कि यह दुनिया क़ायम रहे जब तक वे समस्त बातें पूरी न हो जाएं जिनकी ख़ुदा ने खबर दी।

मैं ख़ुदा की तरफ़ से एक क़ुदरत के रंग में ज़ाहिर हुआ और मैं ख़ुदा की एक मुजस्सम क़ुदरत हूँ और मेरे बाद कुछ और वजूद होंगे जो दूसरी क़ुदरत का मज़हर होंगे।"

फ़रमाया कि "..ख़ुदा तआला चाहता है कि इन समस्त रूहों को जो ज़मीन की मुतफ़र्रिक़ आबादियों में आबाद हैं क्या यूरोप और क्या एशीया इन सबको जो नेक फ़ित्रत रखते हैं तौहीद की तरफ़ खींचे और अपने बंदों को दीन-ए-वाहिद पर जमा करे यही ख़ुदा तआला का उद्देश्य है जिस के लिए मैं दुनिया में भेजा गया। अतः तुम इस उद्देश्य की पैरवी करो परंतु नरमी और अख़लाक़ और दुआओं पर-ज़ोर देने से।" (रिसाला अल्वसीयत, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 304 से 307)

अतः जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का देहांत हुआ तो अल्लाह तआला ने अपने वादे के मुताबिक़ जमाअत को हज़रत हकीम मौलाना नूरुद्दीन ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ पर जमा किया। जबकि कुछ लोग चाहते थे कि अंजुमन के हाथ में इंतेज़ाम रहे लेकिन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हो ने कठोर हाथों से इस फ़ित्ने का अंत फ़रमाया।

फिर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हो के देहांत के बाद हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय रज़ियल्लाहु अन्हो ख़िलाफ़त पर निश्चित हुए। आपके ख़लीफ़ा मुंतख़ब होने के वक़्त भी कुछ लोग जो अपने आपको इलमी और अकली लिहाज़ से बहुत बड़ा समझते थे उन्होंने फ़ित्ना उठाने की प्रयास किया और उनकी यह प्रयास था कि इंतेख़ाब-ए-ख़िलाफ़त को अगर मुकम्मल तौर पर नहीं रोका जा सकता तो चंद माह के लिए मुल्तवी कर दिया जाए ताकि उन्हें जमाअत में उपद्रव डालने का अवसर मिल जाए लेकिन अल्लाह तआला ने फिर अपने वादे के अनुसार मोमिनीन की जमाअत को एक हाथ पर जमा कर दिया और विरोध करने वाले ख़िलाफ़त और मुनाफ़क़ीन नाकाम-ओ-ना-मुराद हुए और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से आप रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िलाफ़त तक़रीबन बावन साल के अर्से पर मुहीत हुई और दुनिया में मिशन खुले। जमाअत का इंतेज़ामी ढांचा मज़बूत हुआ। ये सब आप रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर में हुआ।

फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो के विसाल के बाद ख़िलाफ़त साल्सा का दौर शुरू

हुआ और हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रज़ियल्लाहु अन्हो अल्लाह तआला के समर्थ और सहायता से ख़िलाफ़त के मुक़ाम पर फ़ायज़ हुए।

फिर जब ख़ुदाई तक़दीर के मुताबिक़ आप विसाल हुआ तो हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के चौथे ख़लीफ़ा के मुक़ाम पर फ़ायज़ फ़रमाया और फिर आप की वफ़ात पर अल्लाह तआला ने मुझे इस मुक़ाम पर खड़ा किया और अल्लाह तआला ने बावजूद मेरी कमज़ोरियों और कमियों के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए हुए वादे के मुताबिक़ जमाअत को तरक़्क़ी की राहों पर गामज़न रखा। इस अर्से में दुश्मन ने जमाअत में तफ़र्रुक़ा डालने, इसे ख़त्म करने, ख़ौफ़ज़दा करने की बेशुमार कोशिशें कीं। दुनिया के मुख़्तलिफ़ देशों में अहमदियों को शहीद किया गया, दुनियावी लालच दिए गए लेकिन अल्लाह तआला अहमदियों को ख़िलाफ़त से ताल्लुक़ और ईमान और यक़ीन में बढ़ाता चला गया। चाहे वह एशिया के अहमदी हैं या यूरोप--ओ-अमरीका के या अफ़्रीक़ा के, प्रत्येक का ख़िलाफ़त से जो ताल्लुक़ है वह केवल और केवल अल्लाह तआला ही पैदा फ़र्मा सकता है। किसी इन्सान में यह ताक़त नहीं है कि ऐसी मुहब्बत और इख़लास का ताल्लुक़ पैदा करे जो लोगों जमाअत को ख़िलाफ़त से है और ख़लीफ़-ए-वक़्त को जमाअत से है। मैं जिस मुल्क में भी जाता हूँ वहां ये नज़्ज़ारे देखने में नज़र आते हैं और यह केवल कहने की बातें नहीं हैं बल्कि आजकल तो कैमरे की आँख उनको महफ़ूज़ कर लेती है। एम.टी.ए. ये नज़्ज़ारे दिखाता रहता है और उनको देखकर विरोधी भी यह कहने पर मजबूर हैं कि अल्लाह तआला की वास्तविक शहादत तुम्हारे साथ है।

और फिर हज़ारों पत्र हैं जो हर महीने मुझे आते हैं। इस बात के इज़हार के लिए कि लिखने वालों का किस क़दर जमाअत से इख़लास-ओ-वफ़ा का ताल्लुक़ है। अल्लाह तआला ख़ुद लोगों को किस तरह ख़िलाफ़त के साथ जोड़ता है और किस तरह उनके दिलों में ख़िलाफ़त से मुहब्बत और ताल्लुक़ पैदा कर देता है।

इस वक़्त मैं कुछ पत्रों के उदाहरण आपके सामने रखना चाहता हूँ जो ये ज़ाहिर करते हैं कि किस तरह ख़ुदा तआला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई की तरफ़ लोगों की राहनुमाई करता है और फिर ये बात भी लोगों के दिलों में डालता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद आपकी ख़िलाफ़त का जो जारी निज़ाम है यह ख़ुदा तआला की ख़ास सहायता के लिए है।

तनज़ानिया में एक मवाज़ना (Mwanza) रीजन है। मुअल्लिम ने वहां से रिपोर्ट दी और लिखा कि एक दिन नमाज़-ए-फ़ज्र के बाद मुबल्लिग़ के साथ अहबाब-ए--जमात से हम मुलाक़ात के उद्देश्य से गए। नमाज़ ज़ुहर से क़बल जब हम मस्जिद वापस पहुंचे तो मस्जिद में सीढियों पर एक महिला को देखा। ख़ैरियत मालूम करने पर पता चला कि वह दुआ करवाने आई है। ग़ालिबन उनका ख़्याल था कि जैसे ग़ैर अज़ जमाअत मुस्लमानों में दम दुरूद इत्यादि का तरीक़ रायज है वैसे ही हम भी करते हैं। अफ़्रीकनों में बड़ा रिवाज है यह दम दुरूद का। इसलिए मुरब्बी साहिब ने उन्हें जमाअती तालीमात से आगाह किया और उनके लिए वहां दुआ भी बहरहाल करवाई। इस महिला ने बताया कि मुझे ख़ाब आते हैं जिनमें एक लंबी दाढ़ी वाले गंदुमी रंग के आदमी मुझे ऐसे ही दीन समझाते हैं जैसे ये मुरब्बी साहिब ने समझाया है। इस पर इस को जमाअत-ए-अहमदिया का परिचय किराया गया। हज़रत-ए--अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और खलीफ़ा की तसावीर दिखाई गईं। उस का कहना था कि जो बुज़ुर्ग उन्हें ख़ाब में आकर समझाते हैं उनकी शक्ल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम या हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो से मिलती है। इसके बाद इस महिला ने अपने तीन बच्चों समेत बैअत भी कर ली। इस ज़माने में भी ख़लीफ़ सानी रज़ियल्लाहु अन्हो की शक्ल भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ दिखाई गई।

फिर इंडोनेशिया का सूबा मग़रिबी कालमंतान है। वहां के एक इलाक़े के रिहायशी हैं। उनका नाम अबदुल्लाह है। उन्होंने अपने बीवी और बच्चों के साथ बैअत की। उनका जमाअत से राबिता 2019 ई. से था और मुबल्लिग़ की बातों से वह काफ़ी प्रभावित थे इसलिए उनका मस्जिद आना जाना था। क्योंकि उनको यह ख़्याल था कि ये दूसरे मौलवियों से बहुत अलग हैं। बहरहाल उनके इस तरह हमारे मिशनरी के क़रीब होने की वजह से इस इलाक़े के मौलवी और मुहल्ले वालों ने इन पर इल्ज़ाम तराशियाँ शुरू कर दें, बेदख़ल कर दिया, उनको अपनी मस्जिद भी नहीं आने देते थे। उन्होंने बताया कि मैंने ख़ाब देखा कि एक ऐसे भंवर में फंस गया हूँ जो मुझे ग़र्क़ कर देगा लेकिन एक बुज़ुर्ग मुझे बचाने आए जिन्होंने जुब्बा पहना हुआ था और लाठी पकड़ी हुई थी। इस पर हमारे मुबल्लिग़ ने उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक तस्वीर दिखाई जिस में हुज़ूर अलैहिस्सलाम एक छड़ी पकड़े हुए थे। उसने लरज़ते हुए कहा कि यह वही बुज़ुर्ग हैं जिन्होंने ख़ाब में मुझे अपनी लाठी से भंवर से बचाया था। इसी तरह उनके बेटे ने भी ख़ाब देखी अब सिर्फ बाप ने नहीं देखी बल्कि बेटे ने भी देखी। उसने कई लोगों को इस तरह जुब्बा पहना हुआ देखा। इस पर हमारे मुबल्लिग़ ने उनको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ खलिफ़ा की तसावीर भी अब दिखाएंगे तो इस लड़के ने हैरत के साथ कहा कि जो लोग उसने देखे थे उनमें हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालस रज़ियल्लाहु अन्हो भी थे, ख़लीफ़तुल मसीह राबा थे और में भी था। उसने कहा ये तो सारे वही लोग हैं जो मैं ने देखे थे। अल्लाह तआला ने इन सबको इकट्ठा कर के भी दिखा दिया कि ख़िलाफ़त का निज़ाम जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद है एक ऐसा निज़ाम है जो नियमित क़ायम किए हुए है। बहरहाल इन ख़ाबों के बाद इस फ़ैमिली ने बैअत कर ली। अगर सच्ची तड़प हो तो फिर इस तरह अल्लाह तआला राहनुमाई भी करता है।

फिर इंडोनेशिया का जुनूबी सूबा है वहां एक जगह बारू (Barru) है। अमीर साहिब ने यह लिखा है। वह कहते हैं कि एक दफ़ा हमारे मुबल्लिग़ फ़ज्र की नमाज़ मस्जिद में पढ़ा रहे थे कि एक शख़्स जमाअत में शामिल होने के लिए आया। उसने बताया कि वह दूसरी जगह से यहां अपनी बीवी के रिश्तेदार से मिलने आया था। बातचीत के दौरान उसने अपनी माज़ी की ज़िंदगी के बारे में बताया जो मुश्किलात से भरी हुई थी। उसने कहा कि एक दफ़ा मुश्किल हालात में उसने ख़ाब में देखा कि सफ़ैद पगड़ी और दाढ़ी वाले बुज़ुर्ग से मुलाक़ात हुई है। ख़ाब में पगड़ी वाले बुज़ुर्ग ने उसे बताया कि चालीस दिनों तक हर फ़ज्र की नमाज़ में सदक़े के ख़ाने में सदक़ा डालते रहो तो मुश्किलात दूर हो जाएँगी। उसने इसी तरह किया जैसा कि ख़ाब में बताया गया था। कहता है बीसवीं दिन उसकी परेशानियाँ ख़त्म होने लगीं। तरह तरह की नौकरियां और सहूलतें भी मिल गईं। उसने बताया कि तक़रीबन तीन माह क़बल सफ़ैद पगड़ी और दाढ़ी वाले शख़्स एक-बार फिर ख़ाब में आए और फल लेने के लिए उसे पहाड़ पर ले गए और कहा कि ये ख़ाब सिर्फ उन लोगों को बताया जाए जो अपने अंदर तक़्वा की अलामत ज़ाहिर करते हों। इसके बाद मुबल्लिग़ ने उसे खलिफ़ा की तसावीरअब दिखाएंगे तो इस शख़्स ने हैरानी के साथ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्राबा रहमहुल्लाह तआला की तस्वीर की तरफ़ इशारा करते हुए कहा कि इस शख़्स को मैंने देखा है। इसलिए ये शख़्स बैअत कर के अहमदियत में शामिल हुआ।

फिर एक महिला जो मुल्क माली की रहने वाली हैं, सिराजी उनका नाम है। उनके बारे में मुक़ामी मुबल्लिग़ वर्णन करते हैं कि बहुत मुख़लिस हैं। इर्द-गिर्द के गांव में जहां भी तब्लीग़ के प्रोग्राम का सुनती हैं अपने बच्चों को कहती हैं कि मुझे साईकल पर बिठा कर वहां लेकर जाओ। वह कहती हैं कि अहमदी होने से पूर्व वह ख़ाब में दो आवाज़ें सुनती थीं। एक तो मेरे ख़ुत्बे के साथ जो तशह्हुद और सूरत फ़ातेहा में पढ़ता हूँ उसकी तिलावत की आवाज़ और दूसरी वहां के मुबल्लिग़ जो हैं कुछ साहिब उनकी तब्लीग़ की आवाज़। कहती हैं मैं परेशान होती थी ये किस की आवाज़ें हैं जो मुझे ख़ाब में आती हैं। अब जब जमाअत का रेडियो प्रोग्राम शुरू हुआ और उन्होंने रेडियो पर मेरा ख़ुतबा सुना, तिलावत सुनी, दूसरे तब्लीग़ी प्रोग्राम देखे तो तब कहने लगीं ये तो वही आवाज़ें हैं जो मैं सुनती थी इसलिए यही बात उनकी अहमदियत की क़बूलि-यत का कारण बनी।

कैमरोन एक और मुल्क है वहां की भी रिपोर्ट है। एक नौजवान अब्दुर्राहमान बैला ने अपने अहमदी होने का वाक़िया वर्णन किया। कहते हैं कुछ वर्ष पूर्व मैंने ख़ाब में दो बुज़ुर्गान को देखा। उनमें से एक ने मुझ से पूछा कि तुम क्या करते हो? मैंने अर्ज़ किया कि मैं शहर में मोटर साईकल चला कर सवारियां उठाता हूँ और इस तरह अपना गुज़ारा करता हूँ। इस पर दूसरे ने मुझे फ़रमाया कि मोटर साईकल को छोड़ें और इधर आकर नमाज़ें पढ़ाऐं। इसलिए मैंने नमाज़ पढ़ाई और इसके बाद मेरी आँख खुल गई। ये कहते हैं कि चंद दिनों के बाद मैंने बाज़ार में एक नौजवान को देखा जो पमफ़लेट तक़सीम कर रहा था और वह पमफ़लेट जमाअत अहमदिया के थे। मैंने घर आकर ग़ौर से इस पमफ़लेट को देखा और पढ़ा तो इस पमफ़लेट पर मैंने एक बुज़ुर्ग की तस्वीर देखी और यह तस्वीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की थी जो मैंने ख़ाब में देखी थी इसके बाद जमाअत के साथ संपर्क का प्रयास किया और मुअल्लिम के साथ उनका मज़ीद राबिता बढ़ा। उन्होंने लिटरेचर मज़ीद हासिल किया और दूसरा शख़्स जो था जो पहले उन्होंने ख़ाब में देखा था, कहते हैं वह तस्वीर भी मुझे बाक़ी लिटरेचर में नज़र आ गई और वह तस्वीर मेरी थी। कहते हैं दूसरी मौजूदा ख़लीफ़ा की थी। कहते हैं मैंने नाम तो सुना हुआ था लेकिन ज़्यादा इलम नहीं था लेकिन ख़ाब में जिस शख़्स ने मुझे नमाज़ पढ़ाने के लिए कहा था वह जमाअत के मौजूदा ख़लीफ़ा थे और उनका ख़ाब में नमाज़ के लिए बुलाना और नमाज़ पढ़ाने की

बरकत थी कि पिछले साल हमारे गांव के चीफ़ फ़ौत हुए और कहते हैं यह संजोग हुआ कि उनकी औलाद नहीं थी और इस वजह से मुझे फिर उनकी वसीयत के मुताबिक़ गांव का चीफ़ भी बना लिया गया और ये इज़्ज़त बख़शी गई और कहते हैं मैं समझता हूँ कि यह इज़्ज़त मुझे जमाअत की वजह से ही मिली है।

फिर गिनी बसाऊ एक और मुल्क है। मुबल्लिग़ इंचार्ज कहते हैं कि यहां एक इलाक़ा है वहां की एक महिला हैं मारिया साहिबा। आयशा मारिया नाम है उनका। उनके दो बेटों ने अहमदियत क़बूल की तो आयशा साहिबा के बड़े भाई जो कि जमाअत के बहुत विरोधी हैं और वही आयशा और इस की फ़ैमिली को सँभालते हैं और खाने इत्यादि की वस्तुएं भी लेकर देते हैं उन्होंने अपनी बहन को फ़ोन किया और तंबी की कि अगर तुम्हारे बेटों ने अहमदियत नहीं छोड़ी तो मैं तुम लोगों की सहायता करना छोड़ दूँगा और मेरा तुम लोगों से कोई ताल्लुक़ नहीं होगा। ये बात सुनकर आयशा बहुत परेशान हो गईं। बेटों को बुलाया और कहा कि अहमदियत छोड़ दो लेकिन इन बेटों ने जवाब दिया कि अल्लाह तआला की ज़ात हमारे लिए काफ़ी है और हम कभी भी अहमदियत नहीं छोड़ेंगे। बेटों का यह जवाब सुनके आयशा और ज़्यादा परेशान हो गईं। कुछ समझ नहीं आ रही थी कि क्या करें। दो दिन के बाद कहती हैं मैंने ख़ाब में देखा कि वह ख़ाब में बहुत परेशान हैं और ज़ोर ज़ोर से रो रही हैं। इतने में सफ़ैद लिबास में मलबूस एक सफ़ैद दाढ़ी वाले शख़्स ने उन्हें बुलाया और रोने की वजह पूछी जिस पर उन्होंने सारा वाक़िया वर्णन किया तो उन्होंने तसल्ली देते हुए कहा कि फ़िक्र न करो तुम्हारे बेटे इन सब के ऊपर रहेंगे। ये बात सुनके उनकी आँख खुल गई। उनका दिल ख़ाब के बाद मुतमइन था। सुबह होते ही उन्होंने ख़ाब हमारे मिशनरी को सुनाई और जब उनको मिशनरी साहिब ने मेरी तस्वीर दिखाई तो उन्होंने कहा ये तो वही शख़्स थे जो मुझे ख़ाब में आए थे और उन्होंने मुझे तसल्ली दिलाई थी। अब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से यह निहायत मुख़लिस अहमदी हैं और लजना के हर काम में प्रथम सफ़ में शामिल हैं।

कीनिया का भी एक वाक़िया है। निकोरो (Nakuru) रीजन के इलाक़ा "भाटी' (Bahati) में वहां हमारी जमाअत है और यह इलाक़ा ईसाई अक्सरियत का इलाक़ा है। छोटा सा क़स्बा है और कहते हैं इस क़स्बे में भी बेशुमार पाँच सौ पच्चास के क़रीब चर्च हैं और वाहिद अहमदी मुस्लमानों का एक सैंटर है। एक दिन एक शख़्स जो मुस्लमान था हमारे सैंटर आया और नमाज़ में शामिल हुआ। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुआ तो उसने बताया कि उसका नाम मोहम्मद अबदी है और वह यहां का मुक़ामी है। कहने लगा कि कुछ दिन पहले मुझे मालूम हुआ कि यहां एक नमाज़ सैंटर है तो मैं नमाज़ के लिए चला आया। जिस पर इस को जमाअत का परिचय करवाया जिस पर उसने कुछ ऐसी बातें कीं कि जिससे मालूम हुआ कि यह जमाअत विरोधी रवैय्या रखता है। एक दिन रास्ते में दुबारा मिला तो मुअल्लिम साहिब ने उसे कहा कि मुस्लमान भाई हो तो ठीक है। इख़तेलाफ़ तुम्हें है लेकिन कोई बात नहीं तुम नमाज़ पढ़ने हमारे सैंटर आ जाया करो। अगर कुछ तहफ़्फ़ुज़ात हैं तुम्हारे ये सवालात हैं तो बग़ैर झिजक के तुम पूछ सकते हो हम जवाब देंगे। कहते हैं मैं दुआ भी करता रहा कि अल्लाह तआला उसका सीना खोले। कहता है चंद दिन के बाद वह शख़्स मुहम्मद अबदी नाम मेरी रिहायश पर आया। जब वह आया तो उस वक़्त घर में एम.टी. ए चल रहा था और वहां एम. टी. ए. पर मेरा ख़ुत्बा लगा हुआ था। काफ़ी देर वह ग़ौर से सुनता रहा। जब ख़ुत्बा ख़त्म हुआ तो कहने लगा मैं बैअत करना चाहता हूँ जिस पर कहते हैं मुझे बड़ी हैरानगी हुई कि बज़ाहिर तो यह विरोधी शख़्स था अचानक यह क्या तबदीली पैदा हो गई। तो जब बैअत की तो इस से वजह पूछी। उसने बताया कि पिछली रात के पिछले-पहर मेरी आँख खुली तो मैं बाहर सेहन में निकला तो अचानक मेरी नज़र आसमान की तरफ़ पड़ी तो कोई रोशन चीज़ मुझे नज़र आई जिसका मेरे दिल पर बहुत गहरा रोब और असर था और अब जब आप के पास आया हूँ और यहां जब मैंने ख़लीफ़ा का ख़ुत्बा देखा है रात वाली तस्वीर जो थी वह मेरे ज़हन में मुकम्मल हो गई। अब मैं इस वक़्त पूरी फ़ैमिली के साथ बैअत करता हूँ और जमाअत में दाख़िल होता हूँ

अब किस तरह अल्लाह तआला एक विरोधी पर न सिर्फ अहमदियत की सच्चाई ज़ाहिर फ़रमाता है बल्कि ख़िलाफ़त से ताल्लुक़ भी इस के दिल में पैदा फ़रमाता है। यह किसी इन्सानी प्रयास से नहीं हो सकता।

कैमरोन एक और मुल्क है, वहां एक शहर मर्वा है। वहां सुलेमान साहिब स्कूल टीचर हैं। कहते हैं मैंने केबल पर एम. टी. ए. का एक प्रोग्राम देखा जिसमें जमाअत अहमदिया के ख़लीफ़ा बच्चों के सवालों के जवाब दे रहे थे। एक बच्चे ने यूक्रेन और रशिया की जंग के विषय में प्रश्न किया तो इमाम जमाअत अहमदिया ने बड़े अच्छे अंदाज़ में सादा तरीक़े से जवाब दिया और यह भी कहा कि मैंने दुनिया की ताक़तों के बहुत ताक़तवर मुल्कों के सदरों को ख़त लिखे हैं। उनको सचेत भी किया है कि अगर उस वक़्त दुनिया में अमन क़ायम ना किया और दुनिया में इन्साफ़ क़ायम न किया तो बहुत ख़तरनाक हालात हो जाऐंगे। कहते हैं ये बातें सुनके मैं सोच रहा था कि मैं जमाअत के किसी शख़्स से राबिता करूँ तो एक दिन मर्वा शहर के लोकल टीवी पर वहां की मुक़ामी ज़बान में इमाम जमाअत अहमदिया के ख़ुतबा का अनुवाद आ रहा था। टीवी स्क्रीन पर सदर जमाअत का फ़ोन नंबर आया तो मैंने जमाअत से राबिता किया। इसके बाद जमाअत का लिटरेचर पढ़ा, ख़लीफ़तुल मसीह की वर्ल्ड क्राइसेज़ वाली किताब पढ़ी। इस के बाद मेरा दिल मुतमइन हुआ और मैं बैअत करके जमाअत में शामिल हो गया। मुअल्लिम साहिब कहते हैं कि अब जमाअत के बड़े सक्रिय हैं।

फिर सीरालियोन से मुबल्लिग़ लिखते हैं इबराहीम नामी एक शख़्स जो कि जमाअत के विरोधी तो नहीं थे लेकिन वह अहमदी नहीं थे, उसने एम. टी. ए. पर मेरे ख़ुत्बात सुने और खुले आम कहना शुरू कर दिया कि मौलवी अहबाब जो जमाअत अहमदिया के ख़िलाफ़ तालीम दे रहे हैं वह झूठ पर आधारित है। मैंने ख़ुद इमाम जमाअत को सुना है कि उन्होंने क़ुरआन-ए-करीम से हवाले दिए हैं। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम लेते हैं और अहादीस वर्णन करते हैं। अहमदियों का कलमा भी वही है। समस्त बातें इस्लाम के मुताबिक़ करते हैं इसलिए अहमदिया मुस्लिम जमाअत झूठी किस तरह हो सकती है। इसके बाद उसने अहमदियत क़बूल कर ली और चंदों में भी शामिल हुआ और बड़े मुख़लिस अहमदी हैं।

ट्रेनी डॉड के अमीर साहिब लिखते हैं एक नौ मुबाईं शरीदा (Sherida) साहिबा ने पिछले वर्ष पति के साथ बैअत की थी। उन्होंने अपनी दो ग़ैर मुस्लिम बहनों और पड़ोसियों को अपने घर पर जलसा यूके देखने की दावत दी। ये लोग जलसे के समस्त इंतेज़ामात से बहुत प्रभावित हुए और खासतौर पर जो मेरे ख़ुतबात् थे कहते हैं वह हमें बहुत पसंद आए। कहने लगीं कि जमाअत अहमदिया ही हक़ीक़ी इस्लाम है और अगर समस्त इस्लामी फ़िरक़े इसी तरह बन जाएं तो इस्लाम दुनिया पर ग़ालिब आ सकता है। वह कहती हैं कि मैंने ख़लीफ़तुल मसीह को देख के रोना शुरू कर दिया और ऐसा महसूस कर रही थी कि मैं उनके क़दमों में बैठी हूँ और गो कुछ अर्से बाद उनके पति तो फ़ौत हो गए हैं लेकिन उन्हों ने अपना घर जमाअत को बतौर वसीयत दिया है और जमाअत के नाम कर दिया है तो कारवाई भी हो रही है।

किर्गीज़स्तान के एक मुक़ामी सुलतान अता ख़ान अहमदी हुए। वह कहते हैं कि मेरे बेटे और पत्नी को बैअत करने की तौफ़ीक़ मिल चुकी थी। मैंने 2017 ई. में हर जुमे को जमाअती मिशन हाऊस जाना शुरू किया। जब मैं और मेरी पत्नी गाड़ी पर नमाज़-ए-जुमा के लिए अपनी जमाअत के मिशन जाते तो तक़रीबन 12 किलो मीटर के सफ़र में हम हमेशा ख़लीफ़तुल मसीह के ख़ुतबा की रिकार्डिंग सुनते रहते। मैंने जब भी इन ख़ुतबात को सुना उस के बाद मेरे एहसासात बहुत मज़बूत हो जाते थे। इसलिए इस वर्ष 2 मई रमज़ानुल मुबारक के मुक़द्दस महीने के इख़तेताम पर ईद के दिन मैंने बैअत की। यह पिछले साल की बात है। कहते हैं में यह पहले वर्णन करना चाहता था लेकिन किसी न किसी तरह यह काम रह जाता था। मैंने मुख़्तसर लिखा है लेकिन जो कुछ मेरे अंदर रूह में हो रहा है उसे शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। मैं हर नमाज़ में अल्लाह से इस्लाम के बारे में इल्म में इज़ाफ़ा की दुआ करता हूँ और हर जुमे की नमाज़ मेरे लिए मुसलसल कुछ न कुछ नया खोल रही है।

पैरागोय की एक महिला लीज़ा (Liza) हैं वह कहती हैं कि अल्लाह तआला ने प्रत्येक को हिदायत देने के मुख़्तलिफ़ रास्ते बनाए हुए हैं। मेरा इस्लाम अहमदियत की तरफ़ सफ़र कोरोना महामारी के दौरान शुरू हुआ मैं ने सोचा कि फ़ारिग़ औक़ात में कोई ज़बान सीखनी चाहिए। इसलिए मैंने ऑनलाइन अरबी सीखनी शुरू कर दी। अरबी के द्वारा ही मुझे इस्लाम के मुताल्लिक़ भी काफ़ी बातों का इलम हुआ और मैंने अध्ययन शुरू कर दिया। एक दिन फेसबुक का एकाऊंट खोला तो वहां "काफ़ी, केक ऐंड इस्लाम" के विषय से मस्जिद में एक प्रोग्राम में शमूलियत का दावतनामा आया हुआ था। मैंने ख़ुद को रजिस्टर्ड कर लिया और वक़्त पर हाज़िर हो गई जहां मेरी मुलाक़ात मुरब्बी से हुई, उनकी पत्नी से हुई। पहले तो मेरे ज़हन में शकूक-ओ-शुबहात थे कि मस्जिद में शायद सिर्फ अरब लोग ही दाख़िल हो सकते हैं। लेकिन वहां जा कर इस्लाम के बारे में जिन बातों का पता चला वह मेरे लिए बिल्कुल नई थीं। मुझे पता चला कि इस्लाम में दीन के मुआमले में कोई जबरदस्ती नहीं है और इस्लाम केवल अमन और सलामती का मज़हब है। इस रात में जब मस्जिद से बाहर आए तो मेरे हाथ में क़ुरआन-ए-करीम था। इसके बाद मेरा मुरब्बी साहिब की पत्नी के साथ मुस्तक़िल संपर्क रहा। मैंने उनसे बहुत से सवालात किए। उनकी हफ़्ता-वार क्लासों में शामिल होना शुरू कर दिया। अपने लिए एक हदफ़ मुक़र्रर किया कि मैंने पूरी

नमाज़ याद करनी है और सीखनी है। इस तरह दो महीने गुज़र गए। मैं हर-रोज़ उठते बैठते इस्लाम के मुताल्लिक़ सोचती रहती। एक दिन मेरे पति मुझे मस्जिद से लेने आए और वापसी पर मैं उनको बता रही थी कि आज मैंने ये ये चीज़ें सीखी हैं। इस पर वह, पति मुझे कहने लगा कि तुम मुस्लमान क्यों नहीं हो जाती? यह सुनकर मैं बिल्कुल ख़ामोश हो गई और मेरी आँखों में आँसू आ गए क्योंकि उस वक़्त में अपनी ज़िंदगी में सिर्फ यही चाहती थी कि मुस्लमान हो जाऊं लेकिन मेरे लिए यह बहुत बड़ा फ़ैसला था। बहरहाल इसके बाद मैंने अहमदी मुस्लमान होने का फ़ैसला किया। मैंने जमाअत के मुताल्लिक़ मज़ीद मालूमात लीं, तहक़ीक़ की और सवालात पूछे। बा-क़ायदगी से ख़लीफ़ा वक़्त के ख़ुतबात सुने और फिर मुझे यक़ीन हो गया कि मैं सही रास्ते पर हूँ। हमारे पास हिदायत है। हमारे पास एक इमाम है जो हमारा ख़्याल रखता है, हमारी राहनुमाई करता है, हमारे लिए दुआएं करता है। जबकि मैंने अभी बहुत कुछ सीखना है लेकिन जमाअत अहमदिया के मुताल्लिक़ मेरा दिल मुतमइन हो चुका है। उनकी बैअत के चंद माह बाद उनके पति ने भी बैअत कर ली और अब ये वहां पर जमाअत के बड़े मुख़लिस और फ़आल हैं।

फिर कोंगो किंशासा एक जगह है वहां बुकावो (Bukavu) शहर के क़रीब ही एक छोटा क़स्बा या गांव है। एक शख़्स वहां अहमद बटाटो साहिब हैं। अपने आठ लोगों की फ़ैमिली समेत बैअत की बल्कि उसके बाद उन्होंने तब्लीग़ भी शुरू कर दी और उनकी तब्लीग़ के नतीजे में बासठ और लोग जमाअत में शामिल हुए। इन दोस्तों का कहना है कि मेरी जमाअत-ए-अहमदिया में शमूलीयत की सबसे बड़ी वजह ख़लीफ़-ए-वक़्त का वजूद बना है और निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त है। अमीर साहिब कहते हैं कि मैं उनको ऑनलाइन क़ुरआन पढ़ा रहा हूँ। वह कहते हैं कि वह जमा-अत-ए-अहमदिया में शामिल होने से पहले सुन्नी मुस्लिम थे परंतु इन सालों में अपने आपसे यह सवाल करते थे कि सुन्नी मुस्लमान नफ़रत क्यों फैलाते हैं? दूसरे यह कि उनमें इतना इख़तेलाफ़ क्यों है और अगर यह हक़ पर हैं तो क्यों उनका कोई एक इमाम नहीं है जिसकी ये पैरवी करते? इस सारी कश्मकश के दौरान एम. टी. ए. पर ख़लीफ़तुल मसीह के ख़ुतबात से मेरा ताल्लुक़ जुड़ा। मेरे अंदर एक आवाज़ ने कहा हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम सच्चे हैं परंतु दूसरी आवाज़ कहती थी कि सारे मुस्लमान अहमदियों को काफ़िर क्यों कहते हैं? आख़िर मेरा संपर्क तनज़ा-निया में एक अहमदी दोस्त से हुआ और फिर फ़्रांस में एक अहमदी दोस्त से राबिता हुआ और अंततः मैं इस इलाक़े के मुबल्लिग़ मुज़म्मिल के राबते में आया। इन सब दोस्तों ने मुझे जमाअती कुतुब पढ़ने को दें और उनको पढ़ने के बाद और तहक़ीक़ के बाद मैंने बैअत कर ली और इस के बाद उन्होंने वहां अपने इलाक़े में भी तब्लीग़ की और वहां भी उनकी तब्लीग़ से बढ़ी।

कोंगो किंशासा के अमीर साहिब कहते हैं कि वहां मादाम वानी तेबो (Mwani Teebo) साहिबा हैं। उनका ताल्लुक़ जमाअत अवीरा (Uvira) से है। बयासी साल उनकी उम्र है। कहती हैं कि मैं मुस्लमान थी परंतु बयालिस साल की उम्र में ईसाई हो गई थी क्योंकि मेरा बेटा एक चर्च में पादरी था। एक दिन रेडियो पर ख़ली-फ़तुल मसीह के एक ख़ुत्बे का फ़्रैंच अनुवाद सुना। सुनते ही उन्होंने मिशन हाऊस फ़ोन किया कि मैं ज़माने के इमाम की बैअत में आना चाहती हूँ और अपने बेटे को कहा कि जब मैं फ़ौत हूँ तो मेरा जनाज़ा जमाअत पढ़ाए।

कैमरोन के मुबल्लिग़ इंचार्ज कहते हैं कि वहां मरवोह (Maroua) से एक दोस्त उम्र ज़ुबैर साहिब हैं। जलसा सालाना कैमरोन 2022 ई. में शमूलीयत के लिए आए। उन्होंने मुअल्लिम साहिब को अपने अहमदी होने की तफ़सीलात बताई। उम्र साहिब ने बताया कि एम. टी. ए. अफ़्रीक़ा के ज़रीया मुझे जमाअत से वाक़फ़ियत हुई और मैं बड़ी दिलचस्पी से ख़लीफ़तुल मसीह के ख़ुतबात जुमा सुना करता था और हर ख़ुत्बे के साथ मुझे जमाअत के साथ लगाओ बढ़ता गया और मेरे इलम में भी इज़ाफ़ा होता नवंबर 2021ई. के पहले ख़ुतबा जुमा में ख़लीफ़तुल मसीह ने तहरीक जदीद के घटनाओं और क़ुर्बानियों का वर्णन किया तो ख़ुदा तआला ने मुझ पर वाज़ेह कर दिया कि यह जमाअत ख़ुदा तआला की तरफ़ से है जहां लोग इस क़दर इस्लाम के लिए क़ुर्बानी कर रहे हैं। इस बात से मेरे दिल को पूरी तसल्ली हो गई और मैंने बैअत कर के जमाअत में शमूलियत इख़तेयार कर ली उसके बाद में बहुत मुतमइन और ख़ुश हूँ।

वाटर लूओ। सैरा लियोन के मुरब्बी कहते हैं कि वहां के उल्फ़ा साहिब को पिछले वर्ष मेरा ख़ुत्बा एम. टी. ए. के ज़रीये सुनने की दावत दी गई। उल्फ़ा साहिब अपनी फ़ैमिली के साथ ख़ुतबा सुनने के लिए आए। ख़ुत्बा सुनकर बहुत प्रभावित हुए और समस्त फ़ैमिली जिसमें आठ लोगों शामिल थे बैअत करके जमाअत में शामिल हो गए। ख़ुदा के फ़ज़ल से अहमदियत में दाख़िल होने के बाद बड़े इख़लास के साथ जमाअती ख़िदमात में हिस्सा लेते हैं और वहां मस्जिद की रेनोवेशन की गई तो सारा वक़्त उन्होंने वक़ार अमल किया और मज़दूरों की तरह काम किया और नफ़ली रोज़े भी ये रखते हैं और इफ़तारी का इंतेज़ाम भी लोगों के लिए हैं।

अमीर साहिब बंगला देश लिखते हैं कि जमाअत के सैक्रेटरी तब्लीग़ का यहां अपना एक छापाख़ाना है जिसमें बिलाल नामी लड़का काम करता है। इस लड़के को जब जमाअत का परिचय हुआ तो उसने हमारी मर्कज़ी मस्जिद में आना शुरू कर दिया जहां उस को मेरे ख़ताबात सुनने का अवसर मिला। कुछ अर्से बाद मौसूफ़ ने बैअत कर ली लेकिन इस की पत्नी ने बैअत नहीं की थी। उनकी शादी को सात साल का अरसा गुज़र चुका था कोई औलाद नहीं थी। अपनी पत्नी से उन्होंने कहा कि ख़लीफ़तुल मसीह को दुआ के लिए लिखते हैं अल्लाह तआला हमें औलाद दे। लोग लिखते हैं हम भी लिख के आज़माते हैं। इसलिए उन्होंने अपनी बीवी को जब उस पर क़ायल कर लिया कि चलो हम भी इस तरह दुआ के लिए दरख़ास्त करके आज़माते हैं। दुआ के लिए उन्होंने दरख़ास्त की। कुछ महीने बाद उनकी पत्नी उम्मीद से हो गईं और उनकी पत्नी को यह ख़्याल पैदा हुआ कि यह ख़लीफ़तुल मसीह की दुआओं से अल्लाह तआला ने फ़ज़ल फ़रमाया है इसलिए उसने भी बैअत कर ली।

अमीर साहिब बेलजियम कहते हैं कि मराक़श के एक दोस्त वहां रहते हैं। उन्होंने एक लंबा अरसा अहमदियत के बारे में तहक़ीक़ करके फिर बैअत की है। वह कहते हैं कि मैंने बचपन से ही बहुत से उल्मा की सोहबत में वक़्त गुज़ारा है लेकिन ख़ली-फ़तुल मसीह के ख़ुत्बात न सिर्फ क़ुरआन-ए-करीम की तफ़सीर हैं बल्कि इन्सान को अल्लाह तआला के क़रीब ले जाते हैं और उनके ख़ुत्बात सुनने के बाद मुझे नमाज़ों का मज़ा आने लगा है।

ख़ुदा तआला ने मुझे सच्ची ख़्वाबें भी दिखाई हैं। अहमदियत ने मेरी ज़िंदगी बदल दी है और वह जब यह ज़िक्र करते हैं तो रोने लग जाते हैं।

कीनेमा (Kenema) सैरालियोन के मुरब्बी कहते हैं। एक जगह पाँच सौ से ज़्यादा ग़ैर अहमदी अहबाब जमा थे। वहां एक शख़्स खड़ा हुआ और कहने लगा कि अहमदी ही इस्लाम के सच्चे रस्ते पर हैं। हम उनसे नफ़रत करते हैं क्योंकि वह हमेशा सच्च कहते हैं। अगर कोई चीज़ सफ़ैद होती है तो वह उस को सफ़ैद ही कहते हैं लेकिन जब कोई चीज़ काली होती है तो हम उसे सफ़ैद कहते हैं यही वजह है कि हम में सच्चाई और इत्तेहाद नहीं। इसी इलाक़े के एक इमाम साहिब भी खड़े हुए। कहने लगे कि अगर आप अहमदियों के ख़लीफ़ा के ख़ुतबात सुनो तो तुम्हें इस्लाम की दरुस्त तालीम का इलम होगा।

मैंने अहमदियत तो क़बूल नहीं की लेकिन हर जुमा के रोज़ मैं उनके ख़लीफ़ा का ख़ुत्बा सुनता हूँ। अगर आप सुनोगे तो आपको इस्लामी तालीमात का इलम होगा और आपका दिल नहीं करेगा कि ख़ुत्बा खतम हो।

फिर मशाका रीजन के मुबल्लिग़ कहते हैं कि मैं एक काम के सिलसिला में बैंक गया। काम ख़त्म होने पर भूख लगी तो एक होटल में खाना खाने चला गया। वहां देखा तो होटल में लगे टीवी पर एम. टी. ए. की नशरियात आ रही थीं और वह लोग, रिकार्ड शूदा मेरा ख़ुतबा उस पर लगा हुआ था, वह सुन रहे थे। वहां की इंतेज़ामिया से मैंने पूछा तो उन्होंने बताया कि हम अक्सर यह चैनल देखते हैं और इस चैनल पर बहुत अच्छी अच्छी बातें बताई जाती हैं जो हमारे लिए फ़ाइदामंद हैं और हमें यह चैनल देखना अच्छा लगता है। तो इस तरह अल्लाह तआला जमाअत की तब्लीग़ के भी सामान फ़र्मा रहा है और ग़ैरों पर ख़िलाफ़त की एहमियत भी वाज़ेह फ़र्मा रहा है।

माली के मुबल्लिग़ उम्र मआज़ साहिब लिखते हैं कि यहां के जिज् रीजन के एक मैंबर जाला साहिब हैं उन्होंने वर्णन किया कि ऐक्सिडन्ट की वजह से उनकी टांगों की हड्डियां टूट गईं। उन्होंने इसका काफ़ी ईलाज करवाया। देसी ईलाज के इलावा डा-क्टरज़ को भी चैक करवाया। कई महीने गुज़रने के बाद भी हड्डियां जुड़ नहीं रही थीं तो उनको और उनके रिश्तेदारों को काफ़ी मायूसी हो गई थी कि अब उनकी हड्डी नहीं जड़ेगी। कहते हैं कि एक दिन उन्होंने ख़ाब में देखा कि ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस ने उन के लिए दुआ की और वह कहते हैं कि मैं स्वप्न में ही उनकी दुआ के साथ साथ आमीन कहता रहा। कहते हैं कि इसके बाद जब मैं होश में आया तो मैंने आमीन कह कर अपने हाथों को अपनी टांगों पर फेरा। वह कहते हैं कि अल्लाह तआला ने इस के बाद मुझ पर फ़ज़ल फ़रमाया और वह जो मायूसी पैदा हो गई थी कि हड्डियां नहीं जुड़ रही थीं वह आहिस्ता-आहिस्ता जुड़ना शुरू हो गईं और अब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मैं बिल्कुल ठीक ठाक हूँ और कोई नहीं कह सकता कि कभी मेरी टांग की हड्डियां टूटी थीं। तो इस तरह भी अल्लाह तआला ख़िलाफ़त के साथ ताल्लुक़ को मज़बूत करने के सामान पैदा करता है।

ग़ैरों पर क्या असर होता है?अमीर साहिब कोंगो किंशासा लिखते हैं कोंगो में

अल्लाह के फ़ज़ल से जमाअती रेडियो-स्टेशन के इलावा तेईस मुक़ामी एफ़ ऐम रेडियो के ज़रीया हफ़्ता-वार तब्लीग़ी और तर्बीयती प्रोग्राम और मेरा ख़ुतबा जुमा जो है बाक़ायदा नशर किया जाता है। बांदोंदो (Bandundu) के दो मुक़ामी टीवी स्टेशनों पर बराह-ए-रास्त नशर होता है और ख़ुतबा का बहुत ही अच्छा फीडबैक मिल रहा है। एक मुक़ामी ईसाई डाक्टर साहिब से एक दिन रास्ते में मुलाक़ात हुई तो कहने लगे कि मैं आपके इमाम का ख़ुत्बा सुनता हूँ जो कि बहुत ही मोस्सर अंदाज़ में पेश करते हैं। मेरी आपसे दरख़ास्त है कि आप मुक़ामी ज़बान में भी इस का अनुवाद किया करें ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोग इस से लाभ उठाएं।

तो अल्लाह तआला इस तरह भी इस्लाम अहमदियत का पैग़ाम पहुंचाने के सामान पैदा फ़र्मा रहा है। ग़ैर इस बात की तरफ़ तवज्जा दिला रहे हैं कि ख़लीफ़ा वक़्त की आवाज़ को लोगों तक पहुँचाओ। इस तरह ज़मीन हमवार हो रही है और एक वक़्त आएगा जब उनके सीने भी खुलेंगे इन शा अल्लाह और यह अहमदियत और हक़ीक़ी इस्लाम को पहचान लेंगे। अतः ख़िलाफ़त के साथ बरकात के जारी रहने का जो अल्लाह तआला का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वादा है वह ऐसे अजीब अजीब रंग में पूरा हो रहा है कि इन्सानी सोच उस का अहाता भी नहीं कर सकती। अपनों और ग़ैरों के ये घटनाएं और अल्लाह तआला के निशानात ख़िलाफ़त अहमदिया के साथ अल्लाह तआला की सहायता और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिन्हों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में आकर दुनिया को उम्मत-ए-वाहिदा बनाना था उस की सच्चाई का सबूत नहीं है तो और है! यह केवल जमाअत अहमदिया है जो ख़िलाफ़त के निज़ाम के तहत आज सारी दुनिया में इस्लाम की तरक़्क़ी और तब्लीग़ का काम कर रही है और जो प्रगति हम इन कठिन हालात के बावजूद देख रहे हैं वह अल्लाह तआला के साथ होने की शहादत का सबूत ही तो हैं। अगर नहीं तो और क्या है लेकिन जिसकी आँखें अंधी हैं उस को नज़र नहीं आता और न आएगा।

इं शा अल्लाह तआला जमाअत अहमदिया अल्लाह तआला के वाअदे के मुताबिक़ और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के मुताबिक़ कि ख़िलाफ़त अला मिनहाज नबुव्वत जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से शुरू होगी और ता क़ियामत चलेगी। हमेशा क़ायम रहेगी और कोई दुश्मन उस का बाल भी बीका नहीं कर सकता।

अतः हमें प्रयास करना चाहिए कि अपने ईमानों में मज़ीद रोशनी पैदा करें और ख़िलाफ़त अहमदिया से अपने आपको जोड़े रखें और इस के क़ायम रखने के लिए किसी क़ुर्बानी से भी दरेग़ न करें। अल्लाह तआला हम सबको उस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

संस्थान

★ ★ ★

पृष्ठ 2 का शेष

तफ़सील के साथ पहुंचाया तो गांव के सबसे बुज़ुर्ग शख़्स ने कहा कि वह अपने दादा से एक शब्द महदी, महदी अक्सर सुना करता था लेकिन उसे कभी इस बात की समझ नहीं आई और न ही दादा ने कभी उस की तफ़सील बताई लेकिन यह बताया कि इस का ताल्लुक़ इस्लाम से है। इसलिए आज जब आपने तफ़सील से इमाम महदी का वर्णन किया है तो मैं सिदक़-ए-दिल से अहमदियत में दाख़िल होता हूँ और उसने गांव वालों को संबोधित करते हुए कहा कि इस जमाअत को क़बूल कर लें क्योंकि मैंने अक्सर अफ्रीकन देशों में सफ़र किया है और हर जगह मुझे अहमदिया मुस्लिम जमाअत ही इस्लाम की ख़िदमत करती नज़र आई है जबकि दूसरे फ़िरक़े या तो दुनिया कमाने में लगे हुए हैं और या फिर एक दूसरे को काफ़िर क़रार देने के लिए अपनी इलमी काविशें दिखाते रहते हैं। एक यही जमाअत है जो क़ुरआन और इस्लाम की ख़िदमत कर रही है। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से गांव में इमाम समेत बहुत सारे लोगों ने बैअत की। एक बहुत बड़ी जमाअत क़ायम हो गई।

फिर गेम्बया के मुबल्लिग़ इंचार्ज कहते हैं उनका एक ज़िला है "नया मीना" वहां का एक गांव है, कहते हैं हमारी तब्लीग़ी टीम वहां गई। उन्होंने इस्लाम और अहमदियत का पैग़ाम पहुंचाया। इमाम महदी अलैहिस्सलाम की हक़ीक़ी और ख़ूबसूरत तालीमात बताएं और बैअत की दस शरायत भी उनको पढ़के सुनाएँ। देहाती लोग हैं लेकिन अक़ल और विवेक रखते हैं। दस शरायत-ए-बैअत सुनके हैरान रह गए और उनकी समझ में आ गया कि यह तो हक़ीक़ी इस्लाम की बातें हैं जिसकी भविष्यवाणी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाई थी। गांव वालों ने यह कहा कि हमारा यह पहला अवसर है कि हमने इस्लाम की इतनी ख़ूबसूरत तालीम और शानदार तालीम सुनी है। हमारे तथाकथित उल्मा से तो ऐसे ख़ूबसूरत पैग़ामात कोई नहीं सुन सकता और आख़िर उन्होंने यह कहा कि अहमदियत ही असल इस्लाम है और हम जमाअत में शामिल होते हैं और वह इस नतीजा पर पहुंचे कि यह अहमदियत ही है जो इन्सानियत को अल्लाह तआला के ग़ज़ब से बचाएगी। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से एक लम्बी तब्लीग़ी सवाल-ओ-जवाब के सैशन के बाद समस्त लोगों ने जिनकी संख्या तक़रीबन दोसौ के क़रीब थी बैअत करके अहमदियत में शमूलीयत की।

फिर अफ़्रीक़ा के एक देश के हमारे मुरब्बी हैं, वह लिखते हैं कि तब्लीग़ी मैदान में कई दफ़ा बज़ाहिर मामूली घटनाएं होते हैं लेकिन दरअसल पृष्ठभूमि में ख़ुदा तआला का समर्थ और सहायता काम कर रही होती है। कहते हैं हमारी तब्लीग़ी टीम काओनटी के एक अहम टाउन "बामा" में जो कि डिस्ट्रिक्ट हेडक्वार्टर है तब्लीग़ करने का प्रोग्राम बना रही थी। अभी हम मस्जिद में ही बैठे थे कि इसी टाउन से चार लोगों पर आधारित एक दल हमें मिलने आ गया। उनमें एक महिला भी शामिल थी जो कि इस टाउन की औरतों की तंज़ीम की चेयरपर्सन थी। दल के मैंबर ने बताया कि हम आपको दावत देने आए हैं। आप हमारे इलाक़े में आएं और जमाअत अहमदिया का पैग़ाम पहुंचाएं क्योंकि हमें पता चला है कि आपकी जमाअत तब्लीग़ करती है और खासतौर पर बच्चों को क़ुरआन-ए-मजीद सिखाने का इंतेज़ाम करती है। इसलिए हमने अगले ही दिन वहां जाने का प्रोग्राम बना लिया। वहां पहुंच कर जमाअत का परिचय हुआ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आमद और उद्देश्य वर्णन किया इसके बाद सवाल-ओ-जवाब का एक लंबा सिलसिला चलता रहा जिसके अंत पर गांव वालों ने, सबने यह फ़ैसला किया कि आज से हम जमाअत में दाख़िल होते हैं। इस तरह यहां भी नई जमाअत क़ायम हो गई और इसके बाद उन्होंने इस इलाक़े के सारे बच्चों को इकट्ठा करके हमारे सामने पेश कर दिया कि आज से ये जमाअत के बच्चे हैं। आप हमें बताएं उनको कैसे क़ुरआन-ए-मजीद सिखाया जाए? इसलिए मुरब्बी साहिब कहते हैं उनमें से दो लड़कों को क़ुरआन-ए-करीम सिखाने के लिए मैं ने मुंतख़ब किया कि उनको क़ुरआन सिखाया जाएगा और फिर वह वापस जा कर अपनी मस्जिद में अपने इलाक़े में क़ुरआन-ए-करीम की क्लासेज़ लगा कर बाक़ी बच्चों को सिखाएँगे। कहते हैं हमने अभी एक इरादा ही किया था कि अल्लाह तआला ने उसी वक़्त समर्थ और सहायता हमारे साथ शामिल कर दी। पाकिस्तान में क़ुरआन पढ़ना क्या हमें क़ुरआन-ए-करीम सुनने पर भी पाबंदी है। एक अहमदी पर इसलिए मुक़द्दमा हो गया कि वह क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत क्यों सुन रहा था। यह है इन तथाकथित मुस्लमानों का इस्लाम और दूसरी तरफ़ लोग अपने बच्चों को जमाअत के सपुर्द कर रहे हैं कि उन्हें क़ुरआन-ए-करीम पढ़ाएं सिखाएँ क्योंकि जमाअत ही क़ुरआन-ए-करीम का सही इलम रखती है।

कुछ लोग अहमदी हो कर फिर किसी लालच में आ जाते हैं या ख़ौफ़ की वजह से अहमदियत छोड़ देते हैं और फिर यह समझते हैं कि अब यहां जमाअत को ख़त्म कर देंगे लेकिन अल्लाह तआला उनकी ये सोचें उन पर उल्टा देता है और जमाअत बढ़ती चली जाती है जैसा कि उस का वादा है। एवरी कोस्ट के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि रीजन ओमे में एक जगह करिएज़ूको (KreZoukoue) वहां की अक्सरीयत 2008 ई. में जमाअत में शामिल हो गई थी। छोटी सी एक मस्जिद थी जो उस वक़्त वहां तामीर की जा रही थी। लोग अपने तौर पर तामीर कर रहे थे। वह जमाअत को लोगों ने दे दी। जमाअत ने इस मस्जिद को मुकम्मल कर लिया लेकिन कुछ अरसा बाद वहां का

मुक़ामी इमाम जो पहले बैअत कर के जमाअत में शामिल हो गया था उसके दिमाग़ में फ़ुतूर आया। उसने जमाअत से अलैहदगी इख़्तेयार करली और मस्जिद पर भी क़बज़ा कर लिया। फिर लोगों को भी वरग़लाने लगा कि जमाअत से संबंध कर लो लेकिन लोग अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अहमदियत पर क़ायम रहे। बहरहाल जब मौलवी ने मस्जिद पर क़बज़ा कर लिया तो उन लोगों ने आरिज़ी तौर पर प्लास्टिक की शीटों से और कुछ लकड़ियाँ इकट्ठी करके एक आरिज़ी मस्जिद सी शैड बना लिया और वहां नमाज़ें पढ़नी शुरू कीं, जुमा शुरू किया और फिर कोई इस बात की पर्वा नहीं की कि एक पुख़्ता मस्जिद हम छोड़ आए हैं। बहरहाल अल्लाह तआला ने फ़ज़ल किया और कहते हैं इस साल के दौरान जमाअत को वहां दो मंज़िला ख़ूबसूरत मस्जिद बनाने की तौफ़ीक़ मिली जिसके गुंबद भी हैं और मिनारे भी हैं और जिस मस्जिद पर ग़ैर अहमदी इमाम ने क़बज़ा कर लिया था इस से कई गुना बड़ी और ख़ूबसूरत मस्जिद वहां इस इलाक़े में ली।

पाकिस्तान में भी एक तरफ़ तो हमारे मिनारे गिराए जा रहे हैं। मस्जिदों की मेहराबें गिराई जा रही हैं। दूसरी तरफ़ अल्लाह तआला ख़ूबसूरत मस्जिदें हमें दूसरी जगह अता फ़र्मा रहा है और कसरत से अता फ़र्मा रहा है।

अल्लाह तआला किस तरह विरोध करने वाले की कोशिशों के मुक़ाबले में सहायता फ़रमाता है, इस बारे में चाड अफ़्रीक़ा का एक देश है। वहां के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि 2022 ई. की मार्च में जमाअत की पहली मस्जिद का उद्घाटन हुआ। पिछले साल की बातें बता रहा हूँ में। इस साल की तो इंशा-ए-अल्लाह अभी आयेंगी। कहते हैं कि दारुल उलूम हकूमत चाड में हमारी मस्जिद का उद्घाटन हुआ। हासेदीन मुख़्तलिफ़ साज़िशें कर रहे हैं कि जमाअत अहमदिया हमारे मुल्क में एक नया दीन लेकर आ गई है। उद्घाटन के बाद जमाअत की ज़रा ज़्यादा मशहूरी हुई तो हासिदों की संख्या भी बढ़ने लगी और उनकी कार्यवाहियां भी बढ़ने लगीं। मुरब्बी साहिब कहते हैंका हमारे इलाक़े के चंद अइम्माकराम, तथाकथित मौलवी जो हैं मस्जिदों में जमाअत के ख़िलाफ़ तक़रीरें कर रहे हैं, प्रापेगंडा कर रहे हैं कि अहमदियों की मस्जिद को बंद कर दिया जाए। इस सिलसिले में उन्होंने लोगों को इकट्ठा किया और चंद इस्लामिक कौंसल में भी गए और उनसे यह कहा आप लोगों ने जमाअत अहमदिया को मस्जिद बनाने की क्यों इजाज़त दी थी और मस्जिद को जुमा के लिए क्यों खोल दिया गया है, इस मस्जिद को फ़ौरन बंद कराया जाए, इस से हमारे इलाक़े में फ़ित्ना पैदा हो रहा है। इस्लामिक कौंसल वालों ने कहा कि इबादत करना उनका, अहमदियों का हक़ है, हम कैसे मस्जिद जो अल्लाह का घर है उसे बंद कर दें। अगर आप लोगों को किसी फ़ित्ने का डर है तो पुलिस में जा के रिपोर्ट कर दें। वहां की इस्लामिक कौंसल को कम से कम इतनी अक़ल भी है और इंसाफ़ पसंद भी है कि उन्होंने किसी का ख़ौफ़ नहीं किया। पाकिस्तान में तो जज भी लोगों के ख़ौफ़ से हमारे ख़िलाफ़ फ़ैसला दे देते हैं और हमें वहां मस्जिद कहलाना तो अलग, मस्जिद में नमाज़ें पढ़ने और इबादत करने की इजाज़त नहीं। बहरहाल उसके बाद वे लोग पुलिस हेड-क्वार्टर चले गए और शिकायत की कि हमारे इलाक़े में फ़ित्ना पैदा हो रहा है। अहमदियों को बंद कराया जाए। नया दीन लेकर आ गए हैं और नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी नहीं मानते। पुलिस अफ़्सर ने मुबल्लिग़ को बुलाया। जमाअत की रजिस्ट्रेशन की कापी और मस्जिद बनाने की इजाज़त इत्यादि मांगी। सारी चीज़ें, सारे काग़ज़ात पेश किए गए। बहरहाल उसने कहा आप जाएं। तफ़तीश कर के में बताऊँगा। इस के बाद इस पुलिस अफ़्सर ने मुहल्ले के चीफ़ को बुलाया और इस से पूछा कि तुम्हारे मुहल्ले में अहमदियों ने मस्जिद बनाई है और नया दीन लेकर आए हैं और आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नहीं मानते। चीफ़ ने जवाब दिया कि ऐसी तो कोई बात नहीं है। मैंने ख़ुद जुमा उनकी मस्जिद में पढ़ा है और वे मुस्लमानों की तरह नमाज़ पढ़ते हैं और तीन साल से मैं जमाअत अहमदिया को जानता हूँ और ख़िदमत-ए-ख़लक़ के बड़े काम भी ये कर रहे हैं। बहरहाल पुलिस अफ़्सर एक दिन हमारी मस्जिद में भी आ गया और मस्जिद के बाहर لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه देखकर हैरान हो गया और कहा कि आप लोग तो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मानते हैं। मस्जिद के हाल में जो अंदर हिस्सा था क़ुरआन-ए-करीम की आयात देखकर और भी हैरान हुआ। फिर कहा आप का क़िबला भी एक है और मस्जिद में सफ़ बंदी भी मुस्लमानों की मसाजिद की तरह है। मुझे तो ये बताया गया था कि नया दीन लेकर आ गए हैं। बहरहाल पुलिस ने भी कोई कार्रवाई नहीं की। इर्दगिर्द के जो ग़ैर अहमदी थे उनके घरों से भी पूछा। उन्होंने भी कहा कि हमें उनसे कोई मसला नहीं है। जब ये लोग पुलिस से नाकाम हुए तो घरों में जाने लग गए। पड़ोसियों को कहा कि उनको यहां से निकालने के लिए शोर मचाओ तो उन्होंने भी यही जवाब दिया कि मस्जिद तो अल्लाह का घर है और हमें उनमें कोई ऐसी चीज़ नज़र नहीं आ रही जो इस्लाम से हट कर हो तो बहरहाल हर लिहाज़ से उनको नाकामी का मुँह देखना पड़ा।

अल्लाह तआला किस तरह जमाअत में शामिल होने के लिए लोगों के दिलों में डालता है इस का एक वाक़िया बेलीज़ के मुबल्लिग़ वर्णन करते हैं। बेलीज़ सेंट्रल अमरीका का एक मुलक है कहते हैं मैथोडिस्ट (Methodist) चर्च से मज़बूत ताल्लुक़ रखने वाली एक महिला ने जब मस्जिद नूर को तामीर होते देखा तो ख़ुदा तआला ने उनके दिल में डाला कि उन्हें इस मज़हब को क़बूल कर लेना चाहिए। जब मस्जिद की तामीर मुकम्मल हो गई और मस्जिद का उद्घाटन हो गया तो उन्होंने अपने दोस्तों से कहा कि ख़ुदा ने मेरे दिल में डाला है कि मैं वहां जाऊं और इस जमाअत का हिस्सा बन जाऊं। उनके दोस्तों ने कहा कि तुम्हारे घर के क़रीब मुस्लमानों की एक और मस्जिद भी है अगर तुम्हें मुस्लमान होना ही है तो तुम वहां भी जा सकती हो। इस पर इस महिला ने जवाब दिया कि नहीं। ख़ुदा ने मेरे दिल में जमाअत अहमदिया के मुताल्लिक़ डाला है कि ये सही लोग हैं और मुझे उनके साथ हो जाना चाहिए। इसलिए वह जब मस्जिद नूर तशरीफ़ लाएंगे और उन्हें जमाअत का परिचय पेश किया गया तो वह बहुत जज़बाती हो गईं कि किस तरह ख़ुदा तआला उन्हें इस जमाअत में लाया है। मुरब्बी साहिब ने उन्हें बताया कि अल्लाह तआला का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यह इलहाम था कि मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुंचाऊंगा। तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत के लिए इसी तरह अल्लाह तआला काम करता है। इसलिए मस्जिद आने के बाद और इस्लाम अहमदियत की तालीम के बारे में जानने के बाद उन्होंने कुछ दिन में बैअत कर ली और जमाअत में शमूलियत इख़्तेयार कर ली।

कई दफ़ा कुछ लोग जो ग़लतफ़हमी की वजह से या लोगों की बातों में आकर मुख़ालफ़त करते हैं लेकिन होते सईद फ़ित्रत हैं। उनकी अल्लाह तआला किस तरह राहनुमाई फ़रमाता है उसका एक वाक़िया मुबल्लिग़ इंचार्ज गेम्बया लिखते हैं कि ज़िला जमारा में यह एक इलाक़ा है। वहां नई तामीर होने वाली मस्जिद के दरवाज़ों और खिड़कियों के लिए शीशे ख़रीद रहे थे। तो जब शीशे की कटाई के लिए अबू बकर साबाली साहिब एक शख़्स हैं जो इस काम के माहिर थे। उनको बताया कि मस्जिद के लिए शीशे ख़रीदे गए हैं तो उन्होंने अपनी मज़दूरी कम कर दी कि यह मस्जिद के लिए काम है तो मैं कम उजरत लेता हूँ। कहते हैं जब शीशे लेकर हम उस शख़्स के साथ वहां पहुंचे जिसने शीशे लगाने थे तो इतने दूर दराज़ इलाक़े में ख़ूबसूरत मस्जिद देखकर उस शख़्स को बहुत ख़ुशी हुई लेकिन जब उसे मालूम हुआ कि यह अहमदी मुस्लमानों की एक मस्जिद है तो वे बहुत ग़ुस्से में आगया और उसने शीशे तोड़ दिए और शीशे तोड़ने के दौरान ख़ुद भी बेचारा ज़ख़मी हो गया लेकिन अल्लाह तआला ने किस तरह उस की राहनुमाई की। वह कहता है कि मैंने रात को ख़ाब में अपने आपको चीख़ते हुए देखा और समुंद्र में डूबते हुए देखा और जब उसे सहायता की कोई उम्मीद न थी तो उसने एक कश्ती देखी जो उसे बचाने के लिए आ रही थी और इस कश्ती में उसने अमीर जमाअत और उस मुरब्बी को देखा। अगली सुबह जो जुम्मे का दिन था वे मिशन हाऊस आया और बैअत कर के अहमदियत में शामिल हो गया।

इसी तरह तनज़ानिया से क़बूल अहमदियत का एक वाक़िया है। सीमेव रीजन की एक जमाअत है मुआबूमा (Mwabuma) वहां कहते हैं मालमीन ने तब्लीग़ शुरू की। लोकल लोगों से जब मस्जिद और मिशन हाऊस बनाने के लिए प्लाट लेना चाहा तो प्रत्येक ने जो क़ीमत बताई वह बहुत ज़्यादा थी। पूछने पर पता चला कि हमारे ख़िलाफ़ लोकल पादरियों ने एक केमपेन चला रखी है कि कोई उनको मस्जिद बनाने के लिए जगह न बेचे क्योंकि ये जादू करते हैं और उनके पास जिन् होते हैं और क़ुरआन के ज़रीये जिसको चाहें क़तल कर दें और पता भी न चले। इस ख़ौफ़ से कोई हमें मस्जिद बनाने के लिए जगह नहीं दे रहा था। इसाईयों का इलाक़ा था। इस पर मालमीन ने घर-घर जा कर उन लोगों के वस्वसे ख़त्म किए। लोगों की राय बदलने की प्रयास किया। चंद माह के अंदर एक नौजवान ने अपना एक एकड़ का प्लाट हमें देने की हामी भर ली। इस से जमाअत ने प्लाट ले लिया। इस नौजवान ने बताया कि इस मस्जिद के लिए प्लाट फ़रोख़्त करने के बाद बड़ी बरकत पड़ी है। कहता है कि एक आदमी जो कई सालों से उसे क़र्ज़ वापस नहीं कर रहा था और इसकी वजह से इसके कई काम रुके हुए थे प्लाट बेचने के चंद दिन के बाद ही ख़ुद ही उसने सारी रक़म लौटा दी और मेरे सारे क़र्ज़ उसकी वजह से अदा हो गए। बहरहाल इस बात से प्रभावित हो कर वह अपनी फ़ैमिली समेत अहमदी हो गया। इस के बाद कहते हैं ऐसी हवा चली है क़बूल-ए-अहमदियत की कि सैंकड़ों लोग इस इलाक़े में से बैअत कर के जमाअत में शामिल हो गए हैं और वहां एक बड़ी मस्जिद और मिशन हाऊस बनाने की भी अल्लाह तआला ने जमाअत को तौफ़ीक़ दी।

अल्लाह तआला ने जिसको हिदायत देनी हो उसके लिए हिदायत के इंतेज़ाम भी अजीब तरीक़े से करता है।

साओतोमे अफ़्रीक़ा का एक इलाक़ा है वहां के मुबल्लिग़ इंचार्ज लिखते हैं कि मराक़श से एक सय्याह साओतोमे आया। उसने लोगों से पूछा कि यहां कोई मुस्लमानों की मस्जिद है तो लोगों ने उन्हें हमारे मिशन का पता बताया। उसने जुमा हमारे साथ पढ़ा तो उसे तब पता लगा कि यह जमाअत अहमदिया का मिशन हाऊस है। कुछ सवाल जवाब उसने किए। इसके बाद उसने किताब सिररूल खिलाफ़ा और मज़हब के नाम पर ख़ून अरबी में पढ़ें। एम. टी. ए. अल् अरबिया के प्रोग्राम देखे। कुछ देर वहां बैठा रहा। इन दिनों में आलमी बैअत हो रही थी या उसकी रिकार्डिंग आ रही थी। वह देखी तो कहते हैं मार्च में, पिछले वर्ष मार्च में वह दुबारा आया और उसने कहा मैं बैअत फ़ार्म देखना चाहता हूँ। कहते हैं हमने अरबी में बैअत फ़ार्म उस को दिया तो फ़ार्म भर कर के आ गया। कहते हैं मैंने उसे कहा कि इतनी जल्दी न करो

कुछ अरसा दुआ करो फिर फ़ैसला करना। कहता है मैं सारी रात दुआएं करता रहा हूँ और मेरा दिल मुतमइन है मुझ से मज़ीद सब्र नहीं हो सकता कि इमाम की बैअत के बग़ैर में मर गया तो कौन जवाबदेह होगा। उसने कहा कि मैंने देख लिया है कि जमाअत अहमदिया हक़ पर है तो मैंने उसे बताया कि तुम्हारे मुल्क के जो दूसरे मुस्लमान हैं तुम्हारी मुख़ालेफ़त करेंगे, माता पिता तुम्हारी मुख़ालेफ़त करेंगे। किस तरह सामना करोगे? कहने लगा मैंने उनको, माता पिता को बता दिया है और उनको कोई एतराज़ नहीं बल्कि वे ख़ुश हैं। दूसरे कहता है यह मुख़ालेफ़त हो भी तो कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता क्योंकि हक़ीक़ी इस्लाम पर मौत आए इस से बढ़कर मेरे लिए और कुछ नहीं। मुरब्बी साहिब कहते हैं कि उनके वालिद ने भी वीडीयो में मेरे से बात की और बड़ी ख़ुशी का इज़हार किया और अपने बेटे को भी नसीहत की कि मैंने सारी बातें सुनी हैं अब तुमने बैअत की है तो जमाअत के साथ क़ायम रहना अपनी साबित क़दमी दिखाना। अब एक अहमदी बावजूद उसके कि मराक़श मैं अहमदी हैं, जमाअत है लेकिन उसे जमाअत का परिचय वहां नहीं हो सका। अल्लाह तआला ने उसे अफ़्रीक़ा के दौर दराज़ इलाक़े में एक दूसरे मुल्क में भेजा और वहां जा के इस की हिदायत के सामान पैदा फ़रमाए।

उज़बेकिस्तान से एक शख़्स अलिम बाबाईवो साहिब हैं। कहते हैं मेरी पैदाइश मुस्लमान घर में हुई। मेरी उम्र इकत्तीस वर्ष है। उज़बेकिस्तान के शहर ताशकंद से मेरा ताल्लुक़ है। क़ुरआन-ए-करीम सीखने के लिए उस्ताद ढूंढ रहा था कि मेरी मुलाक़ात बाबर जान से हुई। उनसे हक़ीक़ी इस्लाम के बारे में सुना। उनसे क़ुरआन सीखा। उन्होंने इस हक़ीक़त को क़बूल करने में मेरी सहायता की। इसलिए ख़ाकसार बैअत करके जमाअत में शामिल हो गया। अल्लाह तआला ने उस को क़ुरआन-ए--करीम सिखाने के लिए उस्ताद का इंतेज़ाम भी एक अहमदी का किया और ऐसे बहुत सी घटनाएं हैं, यह इत्तिफ़ाक़ नहीं। दुनिया के मुख़्तलिफ़ मुल्कों में ऐसी घटनाएं हैं पहले भी एक मैं ने सुनाया। यह अल्लाह तआला की ताईद की ख़ास निशानी है।

फिर उज़बेकिस्तान से ही एक और शख़्स हैं अज़ीम औफ़ साहिब। कहते हैं मेरी पैदाइश एक मुस्लमान ख़ानदान में हुई। चार वर्ष पहले मैंने बाक़ायदा नमाज़ पढ़नी शुरू की। फिर क़ुरआन-ए-करीम का अनुवाद पढ़ना शुरू कर दिया। एक दिन एक तहरीर मुझ तक पहुंची जिस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस तरह फ़रमाया कि मेरी उम्मत से इस तरह के लोग पैदा होंगे जो हमेशा हक़ पर होंगे और कोई उन्हें नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेगा और ये अलफ़ाज़ मेरे दिल में दाख़िल हो गए। कहते हैं मैंने नमाज़ों और दुआओं में अल्लाह तआला से उन्ही लोगों में शामिल होने की दुआ शुरू कर दी। इस के बाद मुझे कई मुश्किलात का सामना करना पड़ा। मुझे काम से फ़ारिग़ कर दिया गया लेकिन मैं दुआ करता रहा। फिर मेरे अंदर क़ुरआन सीखने की ख़ाहिश पैदा हुई। अल्लाह तआला ने मेरी मुलाक़ात फिर उसी उस्ताद बाबुर साहिब से करवा दी। उस्ताद का ताल्लुक़ जमाअत अहमदिया से था। मुझे इसका इलम नहीं था। सबसे पहले मैंने क़ुरआन पढ़ना सीखा। एक रोज़ मैंने ख़ाब में ख़ाना काअबा को देखा और इसके क़रीब हो कर हाथ से उसे छुवा। फिर मुझे ख़्याल आया कि मेरा तो वुज़ू नहीं। मैं वुज़ू करने ग़ुस्ल-ख़ाने गया मेरी आँख खुल गई। कहते हैं बहरहाल अहमदी उस्ताद से दरस-ओ-तदरीस का सिलसिला जारी रहा। एक रोज़ मैंने उनसे ईसा इब्ने रियम के आसमान से नुज़ूल के बारे में पूछा। उन्होंने बताया कि ईसा ईसा इब्ने रियम तो फ़ौत हो गए हैं और जिस इन्सान ने ईसा ईसा इब्ने रियम के रंग में आना था वह इमाम महदी हैं। फिर मैंने तहक़ीक़ की और यह मालूम किया और अपने उस्ताद को बताया कि वह इन्सान हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद हैं। उस्ताद ने उनको तब्लीग़ नहीं की उन्हों ने कहा वह ज़ाहिर हो गए हैं ख़ुद ही तलाश करो। वह इमाम महदी हैं। ख़ैर उन्होंने तहक़ीक़ की और ख़ुद ही इंटरनैट इत्यादि की तहक़ीक़ से पता लगाया कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम वह इमाम महदी हैं। मेरे उस्ताद ने जब मैंने उस को कहा तो उस ने भी तसदीक़ कर दी कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद ही वही इमाम महदी हैं जिनका हम इंतेज़ार कर रहे हैं। कहते हैं मैंने सारी अलामात के पूरा होने के बावजूद इमाम महदी के बारे में शक का इज़हार किया। फिर मेरे उस्ताद ने जमाअत अहमदिया के बारे में बताया और कहा कि मैं भी इसी जमाअत में से हूँ और यह भी बताया कि वह अर्थात जमाअत अहमदिया संख्या में अभी थोड़ी है और मेरे आपकी तरह के और भी शागिर्द हैं और मुझे अपने शागिर्दों से मिलाया। बहरहाल कहते हैं : मैंने तहक़ीक़ की और दुआओं और तहक़ीक़ के बाद फिर मैंने महसूस किया कि अल्लाह तआला ने दुआएं क़बूल कर ली हैं उस के बाद मैंने बैअत कर ली।

इसी तरह उज़बेकिस्तान से एक और शख़्स हैं उनका भी इसी तरह का वाक़िया है। उनकी क़ौम को भी बैअत की तौफ़ीक़ मिली और फिर उन्होंने पिछले वर्ष बैअत कर ली।

फिर अफ़्रीक़ा के एक मुल्क की एक रिपोर्ट है। वहां के मुबल्लिग़ सिलसिला कहते हैं कि वह और मुक़ामी मुअल्लिम एक जमाअती मीटिंग से वापस आ रहे थे, शाम का वक़्त था, काफ़ी सफ़र रहता था। रास्ते में एक गांव से गुज़रे तो वहां बहुत सारे लोग रास्ते के किनारे खड़े थे जिन्हों ने हमें रोका और बताया कि आज सुबह हमने आपको यहां से गुज़रते देखा था। हमें यक़ीन था कि आप वापस आएँगे। हम काफ़ी देर से आपका इंतेज़ार कर रहे हैं। हम आपसे पूछना चाहते हैं कि क्या आप हमारे गांव से नाराज़ हैं कि इर्द-गिर्द के समस्त दिहात में आपके मैंबर हैं, जमाअत क़ायम है और मसाजिद मौजूद हैं लेकिन आपने हमारे गांव में यह पैग़ाम नहीं पहुंचाया। इसलिए कहते हैं हम उसी वक़्त वहां पहुंचे। तब्लीग़ी प्रोग्राम हुआ और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से वहां बैअतें हासिल हुईं। ख़ुदा तआला लोगों के दिलों मैं ख़ुद डाल रहा है कि हक़ की तलाश करो।

सेंट्रल अफ़्रीक़ा के मुबल्लिग़ इंचार्ज लिखते हैं एक ग़ैर अहमदी इमाम जो गांव "नागाला" से ताल्लुक़ रखते हैं, तब्लीग़ के सिलसिला में हमारे अहमदी गांव में आए। मस्जिद को देखा और पूछा यह किस ने बनाई है? जवाब दिया गया कि अहमदियों ने बनाई है। कहने लगे मा शा अल्लाह बड़ी ख़ूबसूरत मस्जिद है। दूसरे रोज़ ये मौलवी-साहब सेंट्रल मिशन हाऊस "बाँगी" में आए। मुबल्लिग़ साहिब से जमाअत के बारे में सवाल-ओ-जवाब करते रहे। आख़िर पर उसने मुबल्लिग़ से पूछा कि आपकी जमाअत मैं किस तरह से दाख़िल हुआ जाता है? इस पर मुबल्लिग़ साहिब ने बताया कि ईमान का ताल्लुक़ दिल से है। अगर आप जमाअती अक़ायद से सहमत हैं तो आपके दिल ने अहमदियत क़बूल कर ली लेकिन हमारे पास बैअत फ़ार्म भी मौजूद है जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दस शर्ते वर्णन फ़रमाई हैं। इस को आप पढ़ लें। जब उनको बैअत फ़ार्म दिया गया तो पढ़ने लगे। कहते हैं अभी वह पढ़ रहे थे और उनकी आँखों से आँसू गिर रहे थे। उनसे रोने की वजह पूछी तो उसने जवाब दिया कि में भी अपने आपको आलिम समझता हूँ और दूसरे मौलवियों से भी जमाअत के मुताल्लिक़ बहुत कुछ सुना है और बहुत ग़लत सुना है। इस बैअत फ़ार्म की दस शरायत को पढ़ कर मुझे पिछली ज़िंदगी से घिन आ रही है कि मैं जमाअत को क्या समझता रहा और आपकी तालीम क्या है। इसलिए मैं अपने जज़बात को क़ाबू नहीं रख सका। इस बैअत फ़ार्म को पढ़ कर मैंने जान लिया है कि जमाअत अहमदिया एक सच्ची और खरी जमाअत है और उनकी मसाजिद का रुख भी क़िबला की तरफ़ है। वही नमाज़ है जो हम पढ़ते हैं। वही क़ुरआन है जो हम पढ़ते हैं और मैं आज तह-ए-दिल से जमाअत अहमदिया को क़बूल करता हूँ। बहरहाल उसे मज़ीद किताबें दी गईं और कहते हैं उन्हें पढ़ कर मैं अब दूसरे मौलवियों का मुँह-बंद कराऊँगा।

अल्लाह तआला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत मैं किस तरह इज़ाफ़ा फ़रमाता है, मानने वालों की संख्या किस तरह बढ़ाता है।

गयाना के मुबल्लिग़ सिलसिला लिखते हैं। लंडन जमाअत में बाक़ायदगी के साथ बुक स्टॉलज़ लगाने और लोगों को फ्लावर तक़सीम करने का प्रोग्राम होता है। एक दिन किसी शख़्स की काल आई कि मैंने आप लोगों का फ्लावर देखा है तो मुझे नहीं मालूम था कि मेरे घर के क़रीब ही नमाज़ सैंटर भी है। बहरहाल जुमा पर आया। उसने कहा कि मैं दो साल से मुस्लमान हूँ परंतु न मुझे क़ुरआन पढ़ना आता है न नमाज़ सीखने का अवसर मिला है तो मुझे सबक़ सिखा दें। उसने कहा आ जाओ और बड़ी एहतियात करते रहे क्योंकि वहां कुछ लोग ऐसे भी हैं जो ग़लत किस्म के लोग होते हैं जो सिर्फ मांगने के लिए आते हैं बहरहाल कहते हैं मैंने कहा आ जाओ अगर यह वाक़ई दीन सीखना चाहता है तो पता लग जाएगा। वह बाक़ायदगी से आता रहा और क़ुरआन-ए-करीम सीखता रहा और बड़ा लंबा अरसा सीखने के बावजूद भी जब उसने कोई मुतालिबा नहीं किया तो कहते हैं मुझे पता लग गया कि यह दीन के मुआमले में बड़ा संजीदा है। फिर उस को जमाअत का परिचय करवाया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर दिखाई। उसने बैअत कर ली। उसका इस्लामी नाम भी रखा गया। फिर उसने कुछ अरसा के बाद मुअल्लिम बनने का इज़हार किया कि मैं जमाअत का मुअल्लिम बनना चाहता हूँ। बहरहाल वहां की जमाअत ने मुझसे पूछा। मैंने उनसे कहा ठीक है। अगर वाक़ई संजीदा है तो उसे मुअल्लिम बना लें। तर्बीयत दें। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अब उस की तर्बीयत हो चुकी है। नमाज़ भी पूरी पढ़ता है, जुमा पढ़ाता है। क़ुरआन-ए-करीम की तालीम से तफ़सीर पढ़के दरस भी देता है। ख़ुतबात भी देता है। कहते हैं कि इस की बैअत के कुछ अरसा बाद नमाज़ सैंटर में एक नुमाइश रखी गई। इस में उसक के माता पिता भी आए। इस का बाप इस्लाम का बड़ा विरोधी था परंतु माँ ने इज़हार किया कि किसी ज़माने में इस्लाम में इस की दिलचस्पी थी और खासतौर पर उस को औरतों का हिजाब पहनना अच्छा लग रहा था जिसकी वजह से उस की माँ को दिलचस्पी पैदा हुई। बहरहाल इस लड़के को, मुअल्लिम को कहा गया कि अपने माता पिता को तुम तब्लीग़ करो ताकि उनको भी अहमदियत में शामिल किया जाए, इस्लाम की तालीम दी जाए। कहने लगा कि वे लोग अपने मज़हब के मुआमले में बड़े सख़्त हैं और मेरी माँ चर्च जाने वाली महिला है और उसने बपतिस्मा भी लिया हुआ है तो बहरहाल कहते हैं कि हम दुआ करते हैं। लड़के को भी कहा कि तुम अपनी माँ के लिए दुआ करो। अल्लाह तआला उस का दिल इस्लाम की तरफ़ मायल कर दे। कहते हैं एक दिन उस की माँ ख़ुद अपने बेटे से सवाल पूछने लगी और नमाज़-ए-

-जुमा पर भी आना शुरू कर दिया। फिर एक दिन अचानक ख़ुद ही उसने कहा कि मैं बैअत करना चाहती हूँ। फिर जमाअत में शामिल भी हो गई और अल्लाह के फ़ज़ल से बाक़ायदगी से लोग जमाअत में शामिल होते हैं। हर जुमा पर आते हैं। नमाज़ें पढ़ने वाले हैं और यह भी उन्होंने इक़रार किया कि जमाअत में शामिल होने के बाद अल्लाह तआला के फ़ज़ल से उनकी सेहत में भी और माल में भी बहुत बरकत पड़ी है जो उन्हें इसाईयत में नहीं थी और अब उस की माता एम.टी.ए भी बाक़ायदगी से देखती हैं।

बहरहाल ये चंद घटनाएं मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ अल्लाह तआला के वादा पूरे होने के बारे में वर्णन कीं हैं। ऐसे बहुत से घटनाएं हैं। विरोध करने वाले अपनी इंतेहाई कोशिशें कर रहे हैं जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहि-स्सलाम ने फ़रमाया लेकिन दूसरी तरफ़ अल्लाह तआला दुनिया के हर मुल्क में जमाअत की तरक़्क़ी के नए रास्ते खोल रहा है। अतः इस बात से जहां हमें अल्लाह तआला का शुक्रगुज़ार होना चाहिए वहां अपनी हालतों का भी जायज़ा लेते रहना चाहिए, अपने ईमानों को मज़बूत करने की भी प्रयास करते रहना चाहिए, अपनी अमली हालतों को बेहतर करना चाहिए, अपनी नसलों में भी ये बात रासिख़ करनी चाहिए कि इबतेला तो आते हैं लेकिन आख़िरी फ़तह अल्लाह तआला की क़ायम करदा जमाअत की ही है। इसलिए कभी अपने ईमानों को मुतज़लज़ल न होने दो। अल्लाह तआला नए आने वालों को भी और पुराने आने वालों को भी साबित क़दम अता फ़रमाए और ईमान और यक़ीन में बढ़ाता जाए।

अब मैं कुछ मरहूमीन का वर्णन करूँगा जिनका बाद में नमाज़ जनाज़ा ग़ायब भी अदा होगा। पहला पहल प्रवीण अख़तर साहिबा का है जो ग़ुलाम क़ादिर साहिब मरहूम स्यालकोट की पत्नी थीं। नव्वे वर्ष की आयु में पिछले दिनों उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके तीन बेटे और चार बेटियां हैं। एक बेटे आरिफ़ महमूद साहिब बेनिन के मुबल्लिग़ सिलसिला हैं जो अपनी माता के जनाज़े में मैदान-ए-अमल में होने की वजह से शामिल नहीं हो सके।

मुबल्लिग़ सिलसिला आरिफ़ महमूद वर्णन करते हैं कि उनकी माता हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत चौधरी इमाम दीन साहिब चौहान की पोती थीं और मुअल्लिम सिलसिला ग़ुलाम अहमद साहिब की बेटी थीं। कादियान में पैदा हुईं। आरंभिक तालीम कादियान से हासिल की। कहते हैं वालिदा बताया करती थीं कि उनके बचपन का ज़्यादा-तर वक़्त कादियान में हज़रत अम्माँ-जान रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ उनकी ख़िदमत में गुज़रा है और यूं आपकी तर्बीयत हज़रत अम्माँ--जान रज़ियल्लाहु अन्हा ने की थी। दीनी तालीम और क़ुरआन पढ़ना उन्ही से सीखा और अक्सर वक़्त हज़रत अम्माँ-जान रज़ियल्लाहु अन्हा के पास उनकी ख़िदमत करते हुए गुज़ारा। कहते हैं अपनी घटनाएं भी सोने से पहले सुनाया करती थीं। कई दफ़ा कहती थीं हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अम्मां जाँऊ को मिलने रात को घर तशरीफ़ लाते और मुझे ख़िदमत करता देख के कहा करते थे कि अपने नेक साथी के लिए भी दुआ किया करो। कहते हैं जब उनकी, मेरी माता की शादी हुई है तो कुछ दिन बाद 1953 ई. में हालात ख़राब हो गए। गांव के कुछ लोगों ने कमज़ोरी दिखाई लेकिन ये अल्लाह तआला के फ़ज़ल से दीन पर क़ायम रहें और अपने ख़ावंद को भी मज़बूत रखा। इस के बाद उन्होंने एक मौलवी-साहब से क़ु-रआन-ए-करीम पढ़ना शुरू किया और नमाज़ और सूरतें भी याद करनी शुरू कीं। इसी तरह अपने डेरे पर एक छोटी सी मस्जिद बना कर वहीं उन्होंने जमाअती तौर पर अपना एक मर्कज़ भी बना लिया।

उनके बड़े बेटे ख़ालिद महमूद जो फ़ौज में थे वह कहते हैं। दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखती थीं। हमें भी यही कहा करती थीं कि दीन पर मज़बूती से क़ायम हो जाओगे तो दुनिया के मुआमलात ख़ुद ही दरुस्त हो जाऐंगे। कहते हैं बचपन से ही हमें नमाज़ों की आदत डाली और फ़ज्र की नमाज़ पर भी मस्जिद कुछ फ़ासले पर थी तो वह ख़ुद मस्जिद छोड़ने जाया करती थीं। मुहल्ले की बहुत सारी औरतें जो अहमदी नहीं थीं उन्हें भी क़ुरआन-ए-करीम की तालीम उन्होंने दी। अब तो क़ुरआन-ए--करीम वहां पढ़ा नहीं सकते लेकिन पहले इतनी शराफ़त थी कि ग़ैर अहमदी बहुत सारे लोग हैं जो अहमदियों से क़ुरआन-ए-करीम पढ़ा थे।

फिर उनके बेटे लिखते हैं या बेटी ने शायद लिखा है कि आम तौर पर देहातों में बच्चियों की तालीम का रिवाज नहीं है। जब बेटी बड़ी हुई तो उनकी वालिदा स्कूल में दाख़िल कराने लगें तो दादा ने एतराज़ किया। उन्होंने बड़े अदब से नियमित प्रयास करके उनको क़ायल किया कि तालीम दिलवानी चाहिए और हमेशा कहा करती थीं कि लड़कियों को इतनी तालीम ज़रूर दिलवानी चाहिए कि कम से कम जमाअती लिटरेचर पढ़ सकें और औलाद की तर्बीयत कर सकें।

रशीद अहमद साहिब मांगा के नंबरदार हैं, वह कहते हैं हमारा डेरा इनके डेरे के क़रीब था। हम लोग भी उनको देखकर अहमदी तो हो गए लेकिन नमाज़ की तरफ़ रुजहान नहीं था। जब आप डेरे पर आतीं तो हम सबको नमाज़ की तलक़ीन करतीं। हम मस्जिद दूर होने का बहाना कर देते और आप ख़ामोश हो जातीं। फिर कहते हैं हमने देखा कि आप खेत से मिट्टी सिर पर उठा कर डेरे पर लातें। यह मिट्टी लाने का सिलसिला कोई एक हफ़्ता तक चलता रहा फिर उस मिट्टी से डेरे के मग़रिब की तरफ़ एक थड़ा बनाया और इस की दो हाथ बराबर चार-दीवारी बनाई। फिर उस जगह की लिपाई करके साफ़सुथरा बनाया। फिर घर से दरी ला कर वहां बिछा दी और फिर उन लोगों को कहा कि लो तुम कहते थे मस्जिद नहीं है इसलिए दूर जाते हैं तो अब यहां अपने डेरे में मस्जिद मैंने बना दी है। यहां आ के बाजमाअत नमाज़ पढ़ा करो। अब नमाज़ में सुस्ती नहीं करनी। तो कहते हैं कि सच्ची बात तो यह है कि उन्होंने हमें नमाज़ी बनाया है। यह थे उन बुज़ुर्गों के आला नमूने कि क़ायल करना है और कोई बहाना बनाया है तो अमली तौर पर ख़ुद ऐसा उदाहरण दिखाया कि जिससे दूसरा मजबूर हो जाए।

फिर उनकी बेटी लिखती हैं कि सब्र-ओ-रज़ा का पैकर थीं। हमें भी तलक़ीन करती थीं और कहा करती थीं कि हज़रत अम्माँ-जान रज़ियल्लाहु अन्हा की यह नसीहत अपने पल्ले बांध लो कि कभी सब्र का दामन न छोड़ो और जितना भी ससुराल में मिल जाए उसी पर क़नाअत करो और ख़ुदा की रज़ा पर हमेशा राज़ी रहो और नमाज़ों को बाक़ायदगी से अदा करो और अपनी औलादों को भी इस का पाबंद बनाओ। कहती थीं इस से अल्लाह तआला रिज़्क़ में भी बरकत देता है।

उनके बेटे जो मुरब्बी हैं, कहते हैं जब जामिआ में दाख़िल हुआ तो मुझे कहने लगीं कि बेटा अगर पढ़ाई में आला पोज़ीशन न भी आए तो कोई बात नहीं लेकिन इमाम--ए-वक़्त की इताअत में हमेशा आला पोज़ीशन पर रहने की प्रयास करना। अल्लाह तआला मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे और उनकी दुआएं उनकी औलाद के लिए पूरी फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा है मुमताज़ वसीम साहिबा जो चौधरी वसीम अहमद नासिर साहिब मरहूम घटियालियाँ की पत्नी थीं। पिछले दिनों उनकी भी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके बेटे भी आजकल ज़ेमबया में मुबल्लिग़ सिलसिला हैं। मरहूमा का ताल्लुक़ मारूफ़ सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत मियां चिराग़ दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो रईस लाहौर के ख़ानदान से था। आप हज़रत मियां अबदुर्रशीद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्स-लाम की नवासी और हज़रत हकीम मुहम्मद हुसैन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो अल् मारूफ़ मरहम ईसा की पड़पोती थीं। मरहूमा निहायत ख़ुश-मिज़ाज, नरम ख़ू, सर्व-प्रिय, मुहब्बत-ओ-शफ़क़त का पैकर थीं। हर व्यक्ति आपकी विशेषताओं का जानकार था। ख़िलाफ़त और निज़ाम जमाअत का बहुत एहतिराम करतीं। हमेशा दुआ के लिए मुझे ख़त लिखा करती थीं और दूसरों को भी तलक़ीन करतीं कि ख़त लिखा करो। बाक़ायदगी से नमाज़ों की अदायगी और तिलावत क़ुरआन-ए-करीम किया करतीं। आख़िर उम्र तक चंदाजात की अदायगी भी पाबंदी से करती रहीं। अल्लाह के फ़ज़ल से बी ए फ़ाज़िल थीं। कहते हैं कि मेरे वालिद साहिब मुलाज़मत से रिटायरमैंट पर कराची से गांव शिफ़्ट हुए तो बच्चों और बच्चियों को वहां क़ायदा और क़ुरआन-ए-करीम पढ़ाया और इसके इलावा दुनियावी तालीम भी देती रहीं। लंबा अरसा बीमार रही हैं लेकिन बड़े सब्र से अपनी बीमारी को बर्दाश्त किया। कोई गिला शिकवा नहीं था। मुरब्बी साहिब ने लिखा है कि बड़े होने के बावजूद ग़लती पर अगर कोई ग़लती होती तो हमेशा माफ़ी मांग लिया करती थीं। दो बेटे उनके वक़्फ़ हैं और बड़ी ख़ुशी से उन्होंने बेटों को वक़्फ़ किया और इस बात पर बड़ी ख़ुश थीं कि बेटे वक़्फ़ हैं। उनके पिता की दो शादियां थीं। पहली माता की वफ़ात के बाद कहते हैं कि हमारे उन भाईयों को भी अपने सगे बच्चों की तरह पाला और कभी वालिदा की कमी महसूस नहीं होने दी। यह ज़ेमबिया जब गए हैं तो बहुत सारी दुआएं देकर रुख़स्त किया और कहते हैं कुछ अरसा पहले मैं उनको मिलने गया था तो वापसी पर यही कहा कि अल्लाह तआला तुम्हारा हाफ़िज़ हो। अब शायद दुबारा मुलाक़ात न हो सके। पाँच बेटे और एक बेटी यादगार छोड़े हैं। दो अल्लाह तआला के फ़ज़ल से वाक़िफ़-ए-ज़िंदगी हैं। नसीर नासिर साहिब मुअल्लिम वक़्फ़ जदीद हैं। दूसरे मुब-ल्लिग़ सिलसिला ज़ेमबिया में हैं और यह बाव्जाह बैरून-ए-मुल्क होने के, मैदान-ए--अमल में होने के शामिल नहीं हो सके थे। अल्लाह तआला मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनकी दुआएं उनकी औलाद के लिए कबूल फ़रमाए।

तीसरा वर्णन है ब्रीगेडीयर मुनव्वर अहमद राना साहिब। यह जमाअत रावलपिंडी ज़िला के जनरल सैक्रेटरी थे। उनकी भी पिछले दिनों वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके ख़ानदान में अहमदियत उनके दादा चौधरी ग़ुलाम अहमद साहिब ऐडवोकेट सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़रीया से आई थी। 1971 ई. में पाकिस्तान आर्मी में उन्होंने कमीशन लिया। दौरान सर्विस जमाअत से आपका गहिरा ताल्लुक़ रहा। सर्विस के दौरान मुख़्तलिफ़ स्टेशनों पर अपना घर नमाज़ सैंटर के तौर पर पेश करते रहे। जमाअत से वालहाना मुहब्बत करने वाले एक दिलेर अहमदी अफ़्सर थे। रिटायरमैंट के बाद हर वक़त जमाअती ख़िदमत के लिए अपने आपको पेश कर दिया। इमारत कैन्ट और ज़िला रावलपिंडी में उनको मुख़्तलिफ़ ख़िदमात सरअंजाम देने की तौफ़ीक़ मिली। बड़ी मेहनत और लगन से जमाअती ख़िदमात सरअंजाम दिया करते थे और इंतेहाई मुरव्वत और इनकेसारी और आजिज़ी से अपने साथियों से सुलूक करते और अपने ओहदे दारों की इताअत करते। ख़िलाफ़त से निहायत वफ़ा और इताअत का ताल्लुक़ था। हर तहरीक पर लब्बैक कहने वाले थे। ग़रीबों के हमदरद थे। मुश्किलात में मुबतला लोगों के लिए हमावक़त सहायता के लिए तैयार रहते थे। अल्लाह के फ़ज़ल से मूसी थे। पीछे रहने वालों में उनकी ज़ईफ़ वालिदा हैं सलीमा ख़ुरशीद साहिबा और दो बीवियां और पाँच बच्चे शामिल हैं। बच्चों में चार बेटियां और एक बेटा शामिल हैं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का फ़रमाए।

आख़िरी वर्णन ग्रुप कैप्टन रिटायर्ड अब्दुल शकूर मलिक साहिब का है जो आजकल डैलस अमरीका में थे। वहां पिछले दिनों उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके नाना ग़ुलाम नबी शैख़-साहब हज़रत मसीह मौऊद अलैहि-स्सलाम के सहाबी थे। उनके ज़रीया आपके आबाई गांव नौशहरा में भी अहमदियत की तब्लीग़ अमल में आई। तब्लीग़ हुई और जमाअत का नफ़ुज़ हुआ। मरहूम को पाकिस्तान एयर फ़ोर्स में बतौर इंजीनियर और बाद में बतौर ग्रुप कैप्टन काम करने की तौफ़ीक़ मिली। पंद्रह साल तक रावलपिंडी में बतौर नायब अमीर ख़िदमत सरअंजाम देते रहे। इस अरसा में आपने मुतअद्दिद असीरान के मुक़द्दमात की पैरवी भी की। ख़िलाफ़त के साथ गहरा ताल्लुक़ था। एयर फ़ोर्स में मुलाज़मत के दौरान जमाअती मुख़ालिफ़त के बावजूद आपने बड़ी दिलेरी से जमाअत अहमदिया की शनाख़्त को क़ायम रखा। रिटायरमैंट के बाद अपनी ज़िंदगी जमाअत के लिए वक़्फ़ कर दी। इताअत निज़ाम और ख़िलाफ़त का आला नमूना क़ायम करने वाले थे। दिन हो या रात जब भी उनको अमीर जमाअत ने बुलाया हो या जमाअत ने बुलाया फ़ौरन हाज़िर हो जाते थे। कभी कोई उज्र नहीं किया। नमाज़ क़ुरआन के पाबंद थे। हर किसी से मुहब्बत और प्यार करने वाले थे। नेक असर डालने वाले थे।

उनकी बेटी शाज़ीया सुहेल साहिबा कहती हैं कि मेरे अब्बा ज़्यादा-तर वक़्त जमाअत के कामों में गुज़ारते थे। कहीं भी होते उनका पसंदीदा वक़्त-ए-नमाज़ पढ़ना या जमाअत के काम करना था। हमेशा अल्लाह के फ़ज़ल और दुआओं की क़बूलियत के क़िस्से सुनाते। हमेशा अपने बच्चों को साथ बिठाते और ये घटनाए वर्णन करते कि अल्लाह तआला का अहमदियों से क्या ख़ास ताल्लुक़ है। अल्लाह कैसे अहमदियों के मुआमलात को सँभालता है। आपने हमें ख़लीफ़तुल मसीह को समस्त अहम चीज़ों के लिए ख़ुतूत लिखने की तरग़ीब दी। हमेशा कहा करते थे कि हर बात लिखा करो। कहती हैं कि अब्बा जी की एक पहचान अल्लाह पर मुकम्मल तवक्कुल और रज़ाए इलाही के आगे सिर रखना था। बचपन से ही हमें सिखाया कि जब भी हमारे पास कोई पैसा आए तो इस में से चंदा ज़रूर निकाल दो। इस से हमारी आमदनी में भी बरकत होगी और पाकीज़गी में भी इज़ाफ़ा होगा। मरहूम मूसी थे पीछे रहने वालों में तीन बेटियां और एक बेटा शामिल हैं। उनके बेटे डाक्टर आमिर साहिब अमरीका में ही डाक्टर हैं। जमाअत के वह भी काम कर रहे हैं। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनकी दुआएं उनकी औलाद के लिए कबूल फ़रमाए।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 19 मई 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

की वजह से दुनिया की छयासठ फ़ीसद आबादी संसार से खत्म हो जाएगी।

प्रश्न : यूरोप और मग़रिबी अफ़्रीक़ा के लोग किस ज़ोअम में बैठे हुए थे?

उत्तर : हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यूरोप और मग़रिबी देशों और तरक़्क़ी याफताह देश इस ज़ोअम में बैठे हुए थे कि जंगों की सूरत-ए-हाल, फ़साद की सूरत-ए-हाल, इलाक़ों और मुल्कों की तबाही के हालात जहां पैदा हो रहे हैं वह हमसे हज़ारों मील दूर हैं और हम महफ़ूज़ हैं।

प्रश्न : प्रगति याफताह देश जंग को बढ़ावा देने के लिए क्या कर रहे हैं?

उत्तर : हज़ूर अनवर ने फ़रमाया : तरक़्क़ी याफताह मुल्क इन मुल्कों को असलाह फ़राहम करते रहे कि हमारा असलाह बिकता रहे। ये मरते हैं तो मरें, क्या फ़र्क़ पड़ता है।

प्रश्न : अपनी मुफ़ाद के ख़ातिर जो तरक़्क़ी याफताह देश असलाह उपलब्ध कर रहे हैं वह किस बात को भूल गए हैं?

उत्तर : हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया वे भूल गए कि ये हालात उन पर भी आ सकते हैं और अपनी तरक़्क़ी के ज़ोअम में उनकी अक़्लें मारी गईं और आँखें अंधी हो गईं और फिर अब सब दुनिया देख रही है कि वही हुआ जिसका ख़तरा था और यूरोप में भी जंगी हालात पैदा हो गए हैं।

प्रश्न : यदि हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सच्ची मुहब्बत है तो हमें क्या करना होगा?

उत्तर : हज़ूर अनवर ने फ़रमाया : आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सच्ची मुहब्बत है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम को अपनाएं और दुनिया में फैलाएं। दुनिया को बताएं कि आज दुनिया की अमन-ओ-सलामती का यही वाहिद हल है। अतः आओ और अमन-ओ-सलामती की तालीम देने वाले इस अज़ीम वजूद से जुड़ कर दुनिया-ओ-आख़िरत में अपनी सलामती के सामान लो।

प्रश्न : आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मख़्लूक़-ए-ख़ुदा के मुताल्लिक़ किस क़दर दर्द था?

उत्तर : हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया रसू-लुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मख़्लूक़-ए-ख़ुदा के मुताल्लिक़ किस तरह का दर्द था किस तरह की तड़प थी उस के मुताल्लिक़ अल्लाह तआला क़ुरआन-ए--करीम में फ़रमाता है कि لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ (अल् शोरा : 4) क्या तू अपनी जान को इसलिए हलाक कर देगा कि वे मोमिन नहीं होते।

प्रश्न : यूकरेन की वजह से किया हालात हो रहे हैं?

उत्तर : हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : यूकरेन की वजह से रूस और नेटो (NATO) के देश आमने सामने खड़े हैं। अल्लाह तआला बेहतर जानता है कि बरतरी किस ने आख़िर में हासिल करनी है या दोनों की तरफ़ कितना नुक़्सान होना है लेकिन यह निश्चित बात है कि उसके नतायज बहुत ख़तरनाक होने हैं और अगर अब भी अक़्ल से काम न लिया तो एक ख़ौफ़नाक तबाही उस का इंतज़ार कर रही है।

प्रश्न : कुछ तजज़िया निगार जंग के बाद के हालात के बारे में क्या वर्णन फ़रमाते हैं?

उत्तर : हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : कुछ स्थानों पर तजज़िया निगार यह भी कह रहे हैं कि जंगों की सूरत में जो तबाही होनी है वह ऐसी ख़ौफ़नाक होगी कि एक अंदाज़े के मुताबिक़ दौरान-ए-जंग और इसके बाद के दो सालों में ऐटमी हथियारों के प्रयोग की वजह से दुनिया की छयासठ फ़ीसद आबादी सफ़ा हस्ती से मिट जाएगी। ऐसी तबाही-ओ-बर्बादी होगी जिसका तसव्वुर भी कोई नहीं कर सकता। एक आम इन्सान तो इस का सोच भी नहीं सकता।

प्रश्न : आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और क़ुरआन-ए-करीम पर ईमान लाना क्यों ज़रूरी है?

उत्तर : हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : अब आसमान के नीचे फ़क़त एक ही नबी और एक ही किताब है अर्थात हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो आला वा अफ़ज़ल सब नबियों से और उत्तम और अकमल सब रसूलों से और ख़ातमुल अंबिया और लोगों के लिए ख़ैर हैं जिनकी पैरवी से ख़ुदा तआला मिलता है और ज़ुलमाती पर्दे उठते हैं और इसी जहान में सच्ची नजात के आसार नुमायां होते हैं और क़ुरआन शरीफ़ जो सच्ची और कामिल हिदायतों और तासीरों पर आधारित है जिसके ज़रीया से हक़्क़ानी उलूम और मआरिफ़ हासिल होते हैं और बशरी आलूदगियों से दिल पाक होता है और इन्सान जहल और ग़फ़लत और शुबहात के हिजाबों से नजात पाकर हक़्क़ल-यक़ीन के मुक़ाम तक पहुंच जाता

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 06 July 2023 Issue No. 27

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

है।

प्रश्न : हम कब इलम-ओ-मार्फ़त का सही समझ प्राप्त कर सकते हैं?

उत्तर : हज़ूर अनवर ने फ़रमाया : हक़ीक़ी मुवह्हिद ही हक़ीक़ी अमन-ओ--सलामती का अलमबरदार है। अगर मुस्लमान हक़ीक़त में इस नुक्ता को समझ लें और उसके मुताबिक़ अपनी ज़िंदगियों को ढालें तो दुनिया में हक़ीक़ी अम्न पसंद यही होंगे लेकिन फिर वही बात कि इस के लिए आँहज़रत सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम के गुलाम-ए-सादिक़ के साथ जुड़ना भी ज़रूरी है, तभी इलम-ओ-मार्फ़त का सही इदराक भी हो सकता है।

प्रश्न : हक़ीक़ी अमन-ओ-सलामती क़ायम करने के लिए क्या ज़रूरी है?

उत्तर : हज़ूर अनवर ने फ़रमाया हर अहमदी का काम है कि हक़ीक़ी अमन और सलामती दुनिया में पैदा करने के लिए ख़ुदाए वाहिद पर अपने ईमान को पुख़्ता करे। ख़ुदा तआला की मुहब्बत को अपने दिलों में रासिख़ करे कि कोई और मुहब्बत उस की जगह न ले सके। इसके हुक्मों पर अमल करने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतरी हुई तालीम अर्थात क़ुरआन--ए-करीम को अपनी ज़िंदगियों का हिस्सा बनाए। जब हमारे मयार इस हद तक जाऐंगे कि क़ुरआन-ए-क्रीम का हर हुक्म और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हर इरशाद हमारे क़ौल-ओ-फ़ेअल का हिस्सा बन जाएगा तब ही हम दुनिया को इस्लाम का हक़ीक़ी पैग़ाम पहुंचा सकेंगे। उन्हें हक़ीक़ी अमन के गुरु की न सिर्फ तालीम पेश कर के बताएँगे बल्कि अपने अमल से भी सिखाएँगे और यही दुनिया में हक़ीक़ी अमन क़ायम करने का मार्ग है ।

प्रश्न : जलसे पर अहबाब-ओ-मस्तूरात की कितनी हाज़िरी थी?

उत्तर : हज़ूर अनवर ने फ़रमाया : जलसा की हमारी कुल हाज़िरी अनीस हज़ार सात सौ बयासी है जिसमें महिलाएं नौ हज़ार चार-सौ बयासी और पुरुष हज़रात दस हज़ार तीन सौ और इस के इलावा जो दूसरे ज़राए से लोग जलसा सालाना की कार्रवाई देख रहे हैं या सुन रहे हैं उनकी संख्या भी चालीस हज़ार से ऊपर है।

प्रश्न : आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चे दिल से पैरवी इन्सान को किस मुक़ाम पर ले जाती है?

उत्तर : हज़ूर अनवर ने फ़रमाया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चे दिल से पैरवी इन्सान को उस मुक़ाम पर ले जाती है जहां वह अल्लाह तआला से हक़ीक़ी मुहब्बत करने वाला बन जाता है और यह हक़ीक़ी मुहब्बत फिर इन्सान के हर क़ौल-ओ-फ़ेअल को ख़ुदा तआला की रज़ा हासिल करने वाला बना देती है।

प्रश्न : जब किसी से सच्चे दिल से मुहब्बत हो तो क्या हालत होती है?

उत्तर : हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जब किसी से मुहब्बत होती है तो फिर उसके हर क़ौल-ओ-फ़ेअल पर इन्सान अमल करने की प्रयास करता है, उसकी हर बात सुनने और इस को मानने का प्रयास करता है।

प्रश्न : ख़ताब के आख़िर पर हुज़ूर अनवर ने किन दुआओं की तरफ़ अहबाब जमाअत को तवज्जा दिलाई?

उत्तर : हज़ूर अनवर ने फ़रमाया सब यह भी दुआ करें कि अल्लाह तआला सब जलसे मे शामिल होने वालों को जलसा की बरकात का हामिल बनाए और प्रत्येक को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं का वारिस बनाए। दुनिया के हालात में जल्द हर तरह से अमन-ओ-सलामती पैदा फ़रमाएता कि हम अपने जलसे फिर वसीअ पैमाने पर और इसी शान से हर किस्म की फ़िकरों से आज़ाद हो कर आयोजित कर सकें और जलसों को अपनी रुहानी और इलमी प्यास बुझाने का ज़रीया बनाएँ और हक़ीक़त में अपनी ज़िंदगीयों को इस्लामी तालीम के मुताबिक़ ढालने वाले बन जाएं। अल्लाह तआला के प्यार और उस के फ़ज़ल को समेटने वाले हम हूँ। अल्लाह तआला हमें इस तौफीक दे।

प्रश्न : हमें कब ख़ुदा तआला की ख़ुशनुदी हासिल होगी?

उत्तर : हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इस उसूल को सामने रखते हुए हमेशा यह सोच रखनी होगी कि अगर मैं सिर्फ अपने लिए या अपनी क़ौम के लिए या सिर्फ अपने देश के लिए अमन का मुत-मन्नी हूँ तो इस सूरत में मुझे अल्लाह तआला की मदद, उसकी नुसरत और उसकी ख़ुशनुदी कभी हासिल नहीं हो सकती। जब इस अक़ीदे पर इन्सान क़ायम हो जाए कि अल्लाह तआला की ख़ातिर सब कुछ करना है तभी हक़ीक़ी अमन क़ायम हो सकता है अन्यथा नहीं।

प्रश्न : दुनिया में इस वक़्त जितनी भी लड़ाईयां हो रही हैं इस की वजह किया है?

उत्तर : हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : दुनिया में इस वक़्त जितनी लड़ाइयां और फ़साद हैं वह सब इस वजह से हैं कि इन्सान के इरादे साफ़ नहीं हैं।

प्रश्न : किस के ज़रीया से हम ख़ुदा की रज़ा और इस की पैरवी हासिल कर सकते हैं?

उत्तर : हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम पर जो तालीम उतारी इस में फ़रमाया कि قَدۡ جَآءَکُمۡ مِّنَ اللّٰہِ نُوۡرٌ وَّ کِتٰبٌ مُّبِیۡنٌ۔ یَّہۡدِیۡ بِہِ اللّٰہُ مَنِ اتَّبَعَ رِضۡوَانَہٗ سُبُلَ السَّلٰمِ (अल्मायद : 16-17) निसन्देह तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक नूर आ चुका है और एक रोशन किताब भी। अल्लाह उसके ज़रीया उन्हें जो उस की रज़ा की पैरवी करें सलामती की राहों की तरफ़ हिदायत देता है।

प्रश्न : हम कब अपनी दुनिया-ओ-आक़िबत को सँवार सकते हैं?

उत्तर : हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अगर अपनी दुनिया-ओ-आक़िबत संवारनी है तो हमें अल्लाह तआला के इस कलाम को जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतरा हमेशा अपने सामने रखना चाहिए कि यह یَّہۡدِیۡ بِہِ اللّٰہُ مَنِ اتَّبَعَ رِضۡوَانَہٗ سُبُلَ السَّلٰمِ، एस रोशन किताब की हिदायत को हमेशा अपने सामने रखें। इस रोशन किताब की हिदायत को पढ़ना और सामने रखना चाहिए तभी तभी इस्लाम के मार्ग पर चलने वाले होंगे।

★ ★ ★

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affiliated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AIICCE-0289/Raj

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करे, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करे
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad